संसार के कुछ आश्चर्य

श्री व्यथित हृदय

प्रकाशक
आर्य बुक डिपो
करोल बाग, नई दिल्ली – 110005

दो शब्द

संसार जादू का घर है। जिस तरह जादू के घर में विस्मय में डालने वाली तरह-तरह की वस्तुएँ मिलती हैं, उसी प्रकार संसार में भी अनेक ऐसी वस्तुएं हैं, जो मनुष्य को विस्मय में डुबो देती हैं। जैसे पानी बरसाने वाला पेड़, आदमियों को खाने वाला पेड़, उलटी चाल के जानवर और अनोखे पशु तथा पक्षी आदि। कई वीर यात्रियों ने दूर-सुदूर देशों की यात्रा करके इस प्रकार की अद्‌भुत वस्तुओं का पता लगाया है। हमने अपनी इस पुस्तक में इसी प्रकार के अद्‌भुत वृक्षों, पशुओं, पक्षियों और इसी तरह की दूसरी अद्‌भुत वस्तुओं पर प्रकाश डाला है। पुस्तक से बालकों, किशोरों और प्रौढ़ों का मनोरंजन तो होगा ही, ज्ञानवर्धन भी होगा और नयी जानकारी भी मिलेगी।

आशा है, आशा ही नहीं विश्वास है कि हमारे बालक, किशोर और प्रौढ़ पाठक इस पुस्तक को अपनायेंगे, पढ़ेंगे और पढ़कर प्रेरणा लेंगे और अपने ज्ञान में वृद्धि करेंगे।

— लेखक

विषय-क्रम

: 1 :

अनोखे देश में, अनोखे लोग

तुम अपने मन में यह सोचते होगे कि, इस संसार में जितने देश है, तुम्हारे ही देश के समान होंगे। उन देशों के मनुष्यों के रंग-रूप भी तुम्हारे देश के मनुष्यों के समान होंगे। यही क्यों, उन देशों के मनुष्य तुम्हारे देश के मनुष्यों ही के समान विवाह-शादियां भी करते होंगे, किन्तु नहीं, संसार में जितने देश हैं, एक-दूसरे से बिलकुल पृथक हैं। किसी देश के मनुष्य पीले होते हैं, तो किसी के लाल। किसी देश के मनुष्यों का रंग बादामी होता है, तो किसी का गेहुंआ। किसी-किसी देश में दो-तीन रंग के मनुष्य पाए जाते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक देश के मनुष्यों की रीति-रस्मों और उनके पर्व-त्योहारों में भी विभिन्नता पाई जाती है। यहां हम तुम्हें एक ऐसे देश का हाल सुनाने जा रहे हैं, जिसके निवासी बिलकुल काले रंग के होते हैं। जब तुम इन मनुष्यों का हाल सुनोगे, तो इसमें सन्देह नहीं कि, तुम्हारे मन में एक कुतूहल-सा जागृत होगा।

उस देश का नाम अफ्रीका है। यह संसार का सबसे बड़ा अद्भुत देश है। इसलिए अद्भुत नही है कि, यहां के रहने वाले अधिक काले रंग के होते हैं, बल्कि इसलिए कि, यहां के रहने वाले जिस अनोखे ढंग से अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उसकी समता संसार में अन्यत्र तुम्हें खोजने पर नहीं मिलेगी।

अफ्रीका के रहने वाले काले तो होते हैं, किन्तु उनका शरीर बड़ा सुगठित होता है। वे मेहनत करने से कभी नहीं घबराते। चाहे उन्हें जिस कठिन से कठिन काम में लगा दो, वे उसे हंसते-मुस्कुराते हुए समाप्त कर डालेंगे। उनमें गुदना गुदाने की एक बड़ी विचित्र प्रथा है। ऐसा कोई भी अफ्रीकन दिखाई

नहीं देगा, जिसकी बांहों पर गुदने के निशान उभरे हुए न हों। तेल लगाते और अपने बालों को भी संवारते हैं, किन्तु दुःख है कि उन्हें शरीर में साबुन लगाने के लिए नहीं मिलता। वे साबुनकी जगह अपने शरीर में लाल मिट्टी लगाया करते हैं।

अफ्रीकन स्वभाव के बड़े विचित्र होते हैं। वे थोड़ी ही देर में प्रसन्न हो जाते हैं और थोड़ो ही देर में रुद्र के अवतार बन जाते हैं। यदि उनका कोई अपमान करता है, तो वे उसकी जान तक लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। अपमान का बदला चुकाने में अपने मरने-जीने की भी परवाह नहीं करते। वे जिस पर विश्वास कर लेते हैं, वह चाहे फिर उनकी हानि ही क्यों न करे, वे उसका साथ नहीं छोड़ते। वे मदिरा खूब पीते हैं। पीते ही नहीं, पीते-पीते मूच्छित हो जाते हैं। उनके यहां यदि कभी कोई अतिथि पहुंच जाता है, तो उस बेचारे की शामत आ जाती है। चाहे अतिथि गरीब हो, चाहे अमीर, बिना उससे कुछ हुए उसका पिण्ड नहीं छोड़ते। यदि उसने कुछ दे दिया, तो ठीक है, नहीं तो फिर उसकी ऐसी दुर्गति करते हैं कि, कुछ पूछिए नहीं! अतिथियों की तरह परदेशियों को भी अधिक परेशान किया करते हैं। परदेशियों की नकल उतारकर उन्हें चिढ़ाना खूब जानते हैं। इसलिए परदेशी उनसे दूर से पनाह मांगते हैं।

अफ्रीका के रहने वाले स्पष्ट और सुलझी हुई भाषा नहीं बोलते। उनकी ही भांति उनकी भाषा भी बड़ी विचित्र होती है। पूरे देश में कई भाषाएं बोली जाती हैं। उसमें 'सुहेली' का मुख्य स्थान है। उसमें न तो व्याकरण होता है, न उसकी वर्णमाला ही होती है। अफ्रीका-निवासी इस भाषा को बड़े आदर से बोलते हैं।

जिस प्रकार भाषा शब्दों और अक्षरों से नग्न है, उसी प्रकार वे भी नंगे ही रहते हैं। जब काम करने के लिए- घर से निकलते हैं, तो कोई न कोई कपड़ा शरीर में लपेट लेते हैं। वे रंग-बिरंगे कपड़े अधिक पसन्द करते हैं।

गहनों से सजी अफ्रीकन युवती

वारबुट जाति के मनुष्यों को छोड़कर, सभी अफ्रीकन कपड़ा नहीं पहनते। वे कपड़े की जगह, वृक्षों की छाल, बन्दर, भेड़, मृग, तेंदुआ और चीते की खाल बदन में लपेटे रहते हैं। स्त्रियां चार गज़ का एक तरह का कपड़ा पहनती हैं, जिसे टोवी कहते हैं। स्त्रियां अपने बच्चों को पीठ पर बांधकर लटकाए रहती हैं।

अफ्रीका के रहने वाले गहनों के बड़े शौकीन होते हैं। चाहे उन्हें जितने गहने दे दो, वे उन्हें एक साथ ही शरीर पर लाद लेंगे। गहनों से उनका जी कभी नहीं भरता। उनके गहने बड़े विचित्र होते हैं। उनके गहने कांच पोत, मूंगे के दाने, हाथी के दांत और लोहे तथा तांबे के तार के बनते हैं। स्त्रियां चूड़ियों के स्थान पर हाथों में पीतल और तांबे के तार लपेटती हैं। कानों में लोहे के कुण्डल पहनती हैं। बनयन वेज़ी जाति के मनुष्य 'ज़ेबरा' नामक पशु के बालों को रंग कर सिर पर धारण करते हैं। बैल की पूंछ के अन्तिम भाग को भी आभूषणों के काम में लाते हैं। अपने पैरों में लोहे की घंटियां बांध लेते हैं। जब चलते हैं, तब घंटियां बड़े मज़े का शब्द करती हैं। बहुत से लोग शुतुरमुर्ग के पंख भी अपने सिर पर खोंसते हैं। गले में लोहे की माला पहनने की भी प्रथा है।

अफ्रीकन रहने के लिये छोटे-छोटे झोंपड़े बनाते हैं। गांव बहुत ही पास-पास बसे रहते हैं। एक गांव में बीस-पच्चीस झोंपड़े होते हैं। झोंपड़े ज़मीन से चार फुट से अधिक ऊंचे नहीं होते। झोंपड़े घास-फूस के बने रहते हैं। स्त्रियों के लिये अलग घर बने रहते हैं और पुरुषों के लिये अलग। बजारामों जाति के मनुष्य घर के दरवाजों को इतना छोटा बनाते हैं कि, कोई बिना घुटनों के बल झुके भीतर नहीं जा सकता। प्रत्येक गांव में एक बहुत बड़ा पेड़ होता है। पेड़ के नीचे गांव के सभी मनुष्य कभी-कभी मनोविनोद के लिये एकत्र होते हैं। जब गांव का मुखिया मर जाता है, तो गांव उजाड़ दिया जाता है। गांव के मुखिया का घर बहुत ही स्वच्छ और सुन्दर होता है।

अफ्रीका वालों का नृत्य

अफ्रीका वाले बड़े विनोदी होते हैं। खूब नाचते हैं, गाते और बांसुरी बजाते हैं। जब कोई पर्व या त्योहार पड़ता है, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। जब घर से बाहर निकलते हैं, तो पास कोई न कोई हथियार अवश्य रहता है। उनमें आपस में प्रेम नहीं होता। अपने घर ही में एक-दूसरे से लड़ा-भिड़ा करते हैं। जब कोई मर जाता है, तो उसके नाम पर आंसू तक नहीं बहाते। जब किसी को चेचक की बीमारी होती है, तो उसे ले जाकर जंगल में छोड़ आते हैं। कभी मिरचा नहीं खाते। जब रुपया मिलता है, तो बे-मोह खर्च किया करते हैं।

अफ्रीका में जादू-टोने का अधिक चलन है। जब कोई कभी बीमार होता है, तो उसे जादू-टोने का प्रभाव समझते हैं। जादू-टोने के प्रभाव को दूर करने के लिए बलिदान ज़ोरों से होता है। विघ्न-बाधाओं से बचने के लिए लोग दाहिने हाथ में बकरे का सींग लपेटे रहते हैं। जब कोई मरता है, तो खूब गाते और गुर्राते हैं। मुर्दों को क़ब्र में खड़ा करके गाड़ते हैं। राजा की लाश के साथ तीन जीवित स्त्रियां भी दफ़नाई जाती हैं। किसी के मरने पर मादक वस्तुओं का अधिक सेवन करना अनिवार्य समझा जाता है।

विवाह बड़े अद्भुत ढंग से किये जाते हैं। लड़की बेच दी जाती है। उसका मूल्य एक गाय से लेकर दस गाय तक होता है। छोटी उम्र में विवाह नहीं किया जाता। जब लड़के में भरण-पोषण करने की शक्ति आ जाती है, तभी उसका विवाह होता है। कुछ लोग विवाह के समय वर से लड़की के लिये कपड़ा मांगते हैं। जब कपड़ा मिल जाता है, तो लड़की का लड़के के साथ विवाह कर देते हैं। बहुत से लोग वर को अपनी ओर से एक पगड़ी देते हैं। जब तक विवाह नहीं होता, वर लड़की के लिये तरह-तरह के गहने भेजा करता है। विवाह हो जाने पर लड़की अपने ससुराल में रहने लगती है। जिस दिन अपने ससुराल जाती है, लोग खूब नाचते, गाते और शराब पीते हैं। स्त्री-पुरुष में आपस में प्रेम नहीं होता, दोनों बात-बात में एक-दूसरे से लड़ा करते हैं।

अफ्रीकन अपने बच्चों की देख-रेख बड़ी सावधानी से करते हैं। बच्चों की माताएं बच्चों को पीठ पर लादे रहती हैं। जब तक बच्चे बड़े नहीं हो जाते, उनके बाल नहीं काटे जाते। लोगों का विश्वास है कि, सिर पर बाल रहने से बाधाएं नहीं आ सकतीं। जुड़वां या जिस बच्चे के दांत बाहर निकले रहते हैं, वह जान से मार डाला जाता है। जब बच्चा चार साल का हो जाता है, तो उसे धनुष-बाण चलाने की शिक्षा दी जाती है। एक वर्ष के बाद बच्चे को मां का दूध नहीं पीने देते।

यों तो अफ्रीका की समस्त जातियां लड़ाकू और बहादुर हैं, किन्तु उनमें जुलू और काफिर का विशेष स्थान है। जुलू जाति के मनुष्य अधिक वीर और साहसी होते हैं। आलू और मांस खाते हैं। पहले मांस खाकर ही अपना पेट पालते थे, किन्तु अब मक्का और आलू की खेती भी करने लगे हैं। बच्चे केले को बड़े चाव से खाते हैं। जब लड़ने-भिड़ने के लिये कोई शत्रु नहीं मिलता, वे आपस ही में युद्ध करने लगते हैं। उनकी यह धारणा है कि बराबर लड़ते-भिड़ते रहने से शरीर में बल आता है। उन्हें जब किसी युद्ध का समाचार मिलता है, तब वे प्रसन्नतावश खूब नाचते, गाते और उछलते हैं।

कौन न कहेगा कि, अफ्रीका धरती का सबसे अधिक अनोखा देश है। अनोखा देश है उस युग में भी, जिसे विज्ञान का युग कहते हैं।

:2:

पाताल लोक का यात्री

तुमने पाताल लोक का नाम सुना होगा, किन्तु कदाचित् तुम यह न जानते होगे कि, पाताल लोक कहां है और उसमें कौन-कौन सी विशेष वस्तुएं पाई जाती हैं। तुम्हीं नहीं, पाताल लोक के संबंध में बहुत से लोग अनभिज्ञ हैं।

वैज्ञानिक बहुत दिनों से इस प्रश्न को लेकर उलझे हुए हैं। पाताल लोक के संबंध में कोई कुछ कहता है, तो कोई कुछ। किसी का कहना है, पृथ्वी के इस पार से उस पार तक छेद है। वह छेद अटलांटिक महासागर में किसी स्थान पर है। कोई-कोई उसी छेद की राह से पृथ्वी के उस पार पहुंचने का स्वप्न भी देखता है। बहुतों का कथन है, पृथ्वी के गर्भ में अनन्त धन राशि है। यह सब तो है, किन्तु अभी तक कोई यह ठीक-ठीक नहीं बता सका है कि, पाताल लोक के मनुष्य किस रंग के होते हैं।

तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि, पाताल लोक है, और है भूमि के भीतर। हमारे प्राचीन ग्रंथों में पाताल लोक के संबंध में बहुत-सी बातें लिखी हुई हैं। साधारण कहानियों में भी अधिकतर पाताल लोक की चर्चा आया करती है, किन्तु लोग उन बातों पर अभी तक न तो विश्वास करते थे और न उन्हें महत्व ही देते थे। उनका कहना था कि, पाताल लोक है अवश्य, किन्तु उसमें पृथ्वी के समान न नदियां हैं, न पहाड़। न तालाब हैं, न बगीचे।

किन्तु फ्रांस के एडवर्ड ऐलफ्रेड हर्टेल साहब ने लोगों के अविश्वास को विश्वास के रूप में बदल दिया। वे करीब चालीस वर्षों से पाताल लोक का

पाताल लोक की यात्रा पर ऐलफ्रेड हूटॅल

पता लगाने में लगे हुए थे। उन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करके, उन गहरी गुफाओं में प्रवेश किया, जो सीधे पाताल लोक तक गई हैं। उन्होंने उन गहरी गुफाओं से बाहर निकलकर पाताल लोक के संबंध में जो बातें बताईं, इसमें सन्देह नहीं कि, वे बड़ी आश्चर्यजनक हैं।

'दारगलिन' और 'पैंडरिक' नाम की गुफाएं बड़ी भयंकर समझी जाती हैं। इन गुफाओं के समीप बसने वाले मनुष्यों का विश्वास है, इनमें भूतों, प्रेतों और राक्षसों का अड्डा है। इनके नीचे नरक का एक भयानक स्थान है, किन्तु हर्टेल साहब ने लोगों की इस बात पर विश्वास नहीं किया। वे साहस करके दोनों गुफाओं में गए और सही-सलामत बाहर निकल आए। उनका कहना है, गुफाओं के भीतर का दृश्य उतना ही रमणीक और उतना ही सुरम्य है, जितना पृथ्वी के किसी भी सुहावने प्रदेश का हो सकता है।

उन गुफाओं में घुसने के बाद हर्टेल साहब सत्रह और दूसरी गुफाओं में घुसे। उनके पहले उन गुफाओं में जो लोग घुसे थे, वे बाहर लौटकर नहीं आए। हर्टेल साहब फ्रांस की सुप्रसिद्ध गुफा 'राकु पेल' में भी घुसे थे। यह गुफा इतनी भयानक समझी जाती है कि, कोई उसके पास जाने का नाम तक नहीं लेता, किन्तु हर्टेल साहब ने उसमें भी घुसकर लोगों के भय को सदा के लिए निर्मूल कर दिया।

तुम इस बात पर विश्वास न करोगे कि, पृथ्वी के नीचे भी नदियां बहती हैं। हर्टेल साहब ने पाताल-लोक में भी नदियां बहती हुई देखी हैं। एक बार उन्होंने पृथ्वी के नीचे बहने वाली 'सर गन से' नदी का मानचित्र भी तैयार किया था। एक दूसरी बार उन्हें आग का कुण्ड मिला था, जिसमें वे झुलस गए थे।

हर्टेल साहब गुफाओं में प्रवेश करने के पहले अपनी रक्षा का सब प्रकार से प्रबन्ध कर लिया करते थे। वे अपने साथ मोमबत्ती, फोटो लेने का यंत्र, दिया-सलाई, हथौड़ी, चाकू, गर्मी नापने का थर्मामीटर और रस्सी इत्यादि चीजें ले जाते थे। उनके मुंह पर टेलीफोन का चोंगा लगा रहता था। वे उसी के द्वारा

पाताल लोक से लौटे हर्टेल मूर्छितावस्था में

ऊपर रहने वाले आदमियों से बातचीत किया करते थे। जब किसी गुफा में हर्टेल साहब को घुसना होता था, तो सबसे पहले रस्सी के द्वारा उसकी गहराई और गर्मी का पता लगा लिया करते थे।

कई बार हर्टेल साहब को गुफाओं में भीषण आपदाओं का सामना करना पड़ा था। कई बार वे बिलकुल मृतप्राय अवस्था में गुफाओं से बाहर निकाले गए। एक बार जब हर्टेल साहब एक गुफा में घुसे थे, तो उन्होंने नीचे से टेलीफोन के द्वारा जो बातचीत की थी, वह इस प्रकार है—"यहां बड़ी गरमी है। मैं शीघ्र ही मरे हुए पशुओं के शरीर के ऊपर से चल रहा हूं। अब मैं एक बहुत सर्द स्थान में आ गया हूं। यहां चारों ओर कुहरा छाया हुआ है। मेरे सामने एक बहुत बड़ा तालाब दिखाई दे रहा है। तालाब के आस-पास के दृश्य बड़े ही आश्चर्यजनक हैं। अब मैं एक ऐसे स्थान पर आ गया हूं, जहां दुर्गन्ध से भरी वस्तुएं जल रही हैं। दुर्गन्ध के कारण नाक फटी जा रही है।"

हर्टेल साहब ने भूमि के भीतर नाव के द्वारा नदी में परिभ्रमण भी किया था। एक बार हर्टेल साहब ने एक बहुत बड़ी नदी देखी। उनकी इच्छा हुई, नाव पर बैठ सैर की जाए। वे उस बार तो बाहर निकल आए; किन्तु जब दूसरी बार उस गुफा में घुसे, तो अपने साथ नाव भी ले गए। फिर नाव के द्वारा नदी में खूब जल-विहार किया। एक बार नाव-द्वारा नदी में परिभ्रमण करते हुए, बड़ी कठिनाई में पड़ गए थे। अपने दो साथियों के साथ पैडरियाक नदी में नाव पर जल-विहार कर रहे थे। नदी के किनारे नाव लगाकर साथियों के साथ कुछ दूर आगे बढ़ गए। जब लौटकर आए, तो उन्होंने देखा, नाव बह गई है। इसी समय उनके हाथ की मोमबत्ती भी पानी में गिरकर बुझ गई। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा हो गया। अब क्या करें हर्टेल साहब? किन्तु उनके असीम साहस ने उनका साथ दिया, वे अपने साथियों के साथ सकुशल बाहर निकल आए।

एक बार हर्टेल साहब यार्कशायर की हांकरा घिलू नामक गुफा में घुसे।

गुफा के ऊपर उनकी स्त्री टेलीफोन लेकर बैठी हुई थी। कुछ देर बाद जब हर्टेल साहब गुफा से बाहर निकले तो बिलकुल मृतप्राय अवस्था में थे। रूस सरकार का निमंत्रण पाकर हर्टेल साहब रूस गए थे। वहां उन्होंने गरम जल वाली नदी में प्रवेश किया था। नदी के गह्वर से जब बाहर निकले, तो उनका शरीर बिलकुल झुलस गया था।

हर्टेल साहब असीम साहसी थे। उन्होंने अपने जीवन में ऐसे ही अनेक अद्भुत कार्य किए थे। यदि वे गुफाओं के द्वारा पाताल लोक में जाकर, रहस्यों को दुनिया के सामने न रखते, तो आज की दुनिया पाताल लोक के अस्तित्व पर कदाचित् ही विश्वास करती।

: 3 :

जो ढाई हज़ार वर्ष पहले क़ब्रों में गाड़े गए थे

तुमने इंग्लैण्ड का नाम तो सुना होगा ! अंगरेज़ इंग्लैण्ड ही के रहने वाले हैं। इंग्लैण्ड संसार के देशों में अत्यन्त सभ्य और गौरवशाली समझा जाता है। हमारे देश की भांति इंग्लैण्ड भी कई प्रान्तों में बंटा है। उसके एक प्रांत का नाम कार्नवाल है। कुछ दिन हुए, कार्नवाल के उत्तरी समुद्र के किनारे पर, एक ऐसे स्थान का पता चला था, जिसके संबंध में संसार अभी तक बिलकुल अनभिज्ञ था। उस स्थान का नाम 'हारलीनवे' है। हारलीनवे में ढाई हज़ार वर्ष के मनुष्य ज्यों के त्यों क़ब्रों के भीतर से निकाले गये थे।

जब तक इन क़ब्रों का पता नहीं चला था, तब तक कोई 'हारलीनवे' के नाम को नहीं जानता था। इन क़ब्रों के भीतर से जो मनुष्य निकाले गये थे, वे बिलकुल अच्छी दशा में थे। उनकी हड्डियों का ढांचा न तो कहीं से टूटा था, न कहीं उसमें किसी प्रकार की त्रुटि ही पैदा हो पाई थी। प्रकृति के इस अनुपम आश्चर्य पर विद्वानों ने अपना बहुत विस्मय प्रकट किया था। उनका कहना था, आज तक संसार में न तो इतनी प्राचीन क़ब्रें मिली हैं, न उनके भीतर से मनुष्यों का ऐसा ढांचा ही निकाला गया था।

पहले हारलीनवे एक उजाड़ जंगल था। न तो अधिक बस्ती थी, न अधिक आदमी ही निवास करते थे, किन्तु रमणीक अधिक था। प्रकृति ने अपने मनोहर दृश्यों से उसे चारों ओर से गूंथ-सा रक्खा है। कुछ दिन हुए, रेडी नाम का

2500 वर्ष पुरानी क़ब्रों से निकले मानव अवशेष तथा अन्य चीज़ें

एक अंगरेज़ वहां गया। वहां के प्राकृतिक सौन्दर्य पर विमुग्ध हो गया। थोड़ी सी भूमि लेकर अपने लिये मकान बनाने लगा। जब मकान की नींव चौदह फुट की गहराई पर पहुंची, तो साहब को एक क़ब्र मिली। यह क़ब्र एक तहखाने में थी। तहखाना स्लेट के मुलायम पत्थरों का बनाया गया था।

क़ब्र में साहब को और भी बहुत सी चीजें मिली थीं। उनमें सहस्रों वर्ष के प्राचीन आभूषण और हथियार भी थे। उन आभूषणों और हथियारों को देख कर वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया था कि, यह क़ब्र दो हज़ार वर्ष पहले से कम की नहीं है। क़ब्र का पता लगने के पश्चात् उसकी ख़बर कार्नवाल की रायल सोसाइटी को दी गई। सोसाइटी ने यह निश्चय किया कि, उसके आस-पास की भी भूमि खोदी जाय। सोसाइटी ने इसके लिए चन्दे से बहुत-सा धन एकत्र किया। फिर 'हारलोनवे' में खुदाई का काम आरम्भ हो गया।

कई महीनों की खुदाई के बाद, जब पचास सहस्र मन मिट्टी और रेत बाहर निकाल दी गई, तो भूमि के अन्दर सैकड़ों क़ब्रें मिलीं। उन क़ब्रों को देख कर लोगों ने पता लगाया कि, 'हारलोनवे' सहस्रों वर्ष पहले क़ब्रिस्तान था। क़ब्रों से जो कंकाल बाहर निकाले गये, उन्हें देख कर लोगों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, क्योंकि बहुत से कंकाल तो ऐसे थे, जिन्हें देख कर कोई भी उनकी चिर प्राचीनता का अनुमान नहीं लगा सकता। उनके साथ स्लेट के बने हुए बहुत-से तहख़ाने भी सुरक्षित रूप में मिले। कंकालों के साथ जो चीजें प्राप्त हुईं, वे प्राचीन होने के कारण अत्यन्त महत्त्व की समझी गईं।

जो हड्डियां और चीजें उन क़ब्रों के भीतर से प्राप्त हुईं वे कुछ तो अजायब घर में रक्खी गईं और कुछ एक घर में शीशे के छोटे-छोटे बक्सों में। बहुत से शीशे, कंघे, और अंगूठियां भी प्राप्त हुईं। स्लेट और शंख की बहुत सी छोटी-छोटी चीजें भी मिलीं। बड़ी और छोटी-छोटी गोलियां भी पाई गईं। बहुत-सी चीज़ों के ऊपर कई प्रकार की तसवीरें भी बनी हुई थीं। उन तसवीरों ...से पता चलता था कि, उन मनुष्यों को चित्रकला से अधिक प्रेम था

और वे नक़्श की हुई वस्तुओं को बड़े चाव से पहना करते थे।

क़ब्रों के भीतर से जो खोपड़ियां निकाली गईं, वे बिलकुल अच्छी दशा में थीं। उन्हें देखकर पारखी लोग झट बता देते थे कि, वे स्त्रियों की हैं या पुरुषों की। खोपड़ियों में दांत ज्यों के त्यों बने हुए थे। एक बड़ी विचित्र बात यह थी कि, खोपड़ियों की आकृति बहुत कुछ बन्दरों से मिलती-जुलती थीं। ऊपर का हिस्सा तो छोटा था, किन्तु नीचे का जबड़ा बहुत बड़ा। हड्डियों के ढांचे से पता चलता था कि, इन मनुष्यों की लम्बाई प्रायः पांच फुट के लगभग रही होगी।

छः क़ब्रें खोद कर ज्यों की त्यों छोड़ दी गई थीं। उनके ऊपर शीशे के घर बना दिये गये थे। उनमें जो हड्डियां मिलीं वे साफ़ करके रख दी गईं। किसी में एक ढांचा था, तो किसी में दो। किसी-किसी में कई ठठरियां बैठी हुई थीं। उनके घुटने ऊपर को ठुड्डी से लगे हुए थे। कई हड्डियों पर चोट के निशान थे। बहुत-सी हड्डियां चपटी हो गई थीं। उन हड्डियों को देखकर कुछ लोगों का कहना था कि, उन मनुष्यों में बलि-प्रदान की प्रथा थी। जब कोई धार्मिक त्योहार या उत्सव पड़ता था, तो किसी न किसी मनुष्य का बलिदान अवश्य किया जाता था, उसकी हड्डियां तोड़-मरोड़ कर क़ब्र में गाड़ दी जाती थीं। एक क़ब्र ने ऐसी खोपड़ी मिली थी, जो कई स्थान से टूटी हुई थी। नाक की हड्डी कट गई थी। तीन दांत अपने स्थान से हट कर नीचे के जबड़े में धंस गये थे। इससे यह प्रकट होता था कि, जिस मनुष्य का बलिदान होता था, वह बड़ी बुरी तरह कुचल दिया जाता था। लोग उसका सिर पत्थर या और किसी भारी हथियार से तोड़ दिया करते थे।

उन हड्डियों को जितने विद्वानों ने देखा, उन सब का यही कहना था कि, ये हड्डियां ढाई हज़ार वर्ष से कम प्राचीन नहीं है। किसी-किसी का कहना था कि, ये हड्डियां उस समय की हैं, जब रोमन लोगों की इंगलिस्तान पर हुकूमत थी। दांतों की परीक्षा करके लोगों ने बताया था कि, ये जिन मनुष्यों के दांत हैं, वे अनाज अधिक खाते थे और मांस कम, क्योंकि उनके दांत घिसे हुए थे।

: 4 :

देश, जहां गर्म जल मिलता है

संसार विचित्रताओं का भंडार है। जिस ओर देखो, उसी ओर वैचित्र्य ! इसीलिए तो बहुत से लोगों का कहना है, प्रकृति अपनी अनोखी कृतियों से मनुष्य के साथ खिलवाड़ करती है। यदि प्रकृति अपनी कृतियों से मनुष्य के साथ खिलवाड़ न करे, तो मनुष्य उसकी सत्ता ही न स्वीकार करे ! कुछ भी हो, प्रकृति का भंडार बड़ा अनुपम है। इतना अनुपम है कि, बुद्धि उसका अनुभव भी नहीं कर सकती। हमारे देश में जब लोग भोजन बनाने के लिये तैयार होते हैं, तो सबसे पहले उन्हें अग्नि की आवश्यकता पड़ती है। बिना अग्नि के लोग अपना भोजन पका नहीं सकते, किन्तु संसार में एक ऐसा भी देश है, जहां मनुष्यों को अपना भोजन पकाने के लिए अग्नि की आवश्यकता नहीं पड़ती। वहां बिना अग्नि ही के लोग अपना भोजन पका लिया करते हैं। हमारे देश में भोजन पकाने में अग्नि जो काम करती है, वहां वही काम जल करता है। इसी लिए तो लोग उस देश को गर्म जल का देश कहते हैं।

उस देश का नाम न्यूजीलैण्ड है। कुछ दिनों पहले न्यूजीलैण्ड की बड़ी बुरी अवस्था थी। यहां के प्राचीन निवासी, जो माउरी कहलाते हैं, चारों ओर फैले हुए थे। छोटी-छोटी झोंपड़ियों को छोड़कर, कहीं कुछ दिखाई ही नहीं देता था। आज से प्रायः दो सौ वर्ष पूर्व कप्तान कुक नामक एक साहसी अंगरेज़ ने इस देश का पता लगाया था। उसने यहां के मूल निवासियों के संबंध में एक बहुत बड़ी पुस्तक लिखी है। इसके बाद अंगरेज़ों ने इस देश पर धीरे-धीरे अपना अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया। इस समय अंगरेज़ों ही की कृपा से देश

न्यूजीलण्ड की माउरी जाति के लोग

का अधिकतर भाग बहुत सुरम्य बन गया है।

इसका सबसे प्रसिद्ध शहर आकलैण्ड है। यह संसार के बन्दरगाहों में एक अच्छा बन्दरगाह भी समझा जाता है। यदि कोई ढाई सौ वर्ष की उम्र का माउरी सहसा इस नगर में पहुंच जाय, तो वह यह कहे बिना न रहेगा कि, हम न जाने संसार के किस लोक में आ गये! उसका ऐसा कहना बिलकुल स्वाभाविक ही होगा। अब न तो वे माउरी रह गये हैं, न वह न्यूजीलैण्ड है। जहां माउरी पेड़ों की छाल पहनते, मांस-मछली खाते, और तीर-कमान लेकर चलते थे, वहां अब अंगरेज़ी सभ्यता के प्रभाव से लोग पूरे साहब बन गये हैं। उनकी चाल-ढाल, वेश-भूषा, सब में ज़मीन-आसमान का अन्तर हो गया है। अब लोग पढ़ने-लिखने लगे हैं। पढ़ने-लिखने ही नहीं लगे हैं, अपने देश के हित के लिए तरह-तरह के कानून भी पास करने लगे हैं।

किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि, न्यूजीलैण्ड में प्राचीन माउरी रहते ही नहीं। नहीं, इस समय भी एक ऐसा भाग है, जहां प्राचीन माउरी अधिक संख्या में निवास करते हैं। वह भाग आकलैण्ड के उत्तर में है। यदि वहां जाकर देखा जाय तो वन, पर्वत और नदियों के अतिरिक्त और कुछ न मिलेगा। पर्वत भी ऐसे कि जिनके मुख से आग, लावा और राख निकलती है। उन्हीं पर्वतों के बीच में गर्म जल के फ़ौवारे हैं, जिनके कारण लोग इस देश को गर्म जल का देश कहते हैं।

गर्म जल के वे फ़ौवारे अपने आप ही ऊपर उठा करते हैं। उन्हीं फौवारों के आस-पास प्राचीन माउरी इस समय भी अधिक संख्या में निवास करते हैं। उनका इन गर्म फ़ौवारों से अधिक काम निकलता है। जाड़ों के दिनों में वे गर्म जल के कुण्डों में बड़े आनन्द से नहाते और कपड़े धोते हैं। वे गर्म जल के छोटे-छोटे कुण्डों में अपना भोजन भी पकाते हैं।

किसी-किसी जगह के माउरी खाद्य-सामग्री या मांस की पोटली बना कर गर्म जल के कुण्ड के ऊपर लटका देते हैं। थोड़ी देर बाद वे चीज़ें खूब पक

जाती हैं। माउरियों के छोटे-छोटे बच्चे गर्म जल के कुण्डों में खूब तैरते हैं। माउरी-बच्चों में सब से बड़ी विशेपता यह होती है कि, वे चलने-फिरने के पहले ही तैरना सीख जाते हैं।

न्यूजीलैण्ड की तरह और भी कई देशों में गर्म जल के फ़ौवारे पाये जाते हैं। हमारे देश में भी बहुत से गर्म जल के सोते हैं, किन्तु न्यूजीलैण्ड के गर्म जल के फ़ौवारों में जैसी विशेषता है, वैसी शायद और किसी देश के गर्म जल के सोतों में नहीं है। इसी लिए तो भूगोल-शास्त्र के एक बहुत बड़े ज्ञाता ने लिखा है, न्यूजीलैण्ड के गर्म जल के फ़ौवारे प्रकृति की एक अनूपम देन हैं।

: 5 :

पशु-पक्षी, जो लुप्त हो गए

आज जिस संसार को तुम अपनी आंखों से देख रहे हो, कई सहस्र वर्ष पहले उसकी यह दशा नहीं थी। उसमें न सड़कें थीं, न नगर थे। न सरोवर थे, न सुरम्य वाटिकाएं थीं। न स्कूल थे, न कालेज थे। इतना ही नहीं, उस संसार में आज के संसार के समान मनुष्य भी नहीं थे। मनुष्य थे अवश्य, किन्तु वे आज के मनुष्यों के समान न तो अधिक खूबसूरत थे, न कोट, पतलून, कमीज इत्यादि सुन्दर वस्त्र ही पहना करते थे। उस संसार का यदि कोई मनुष्य आज तुम्हारी आंखों के सामने आ जाय, तो इसमें सन्देह नहीं कि, तुम उसे देखकर भयभीत हो जाओगे।

जिस प्रकार मनुष्य की दशा में परिवर्तन हुआ है, उसी प्रकार पशु-पक्षियों की दशा में भी। तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होगा कि, कई सहस्र वर्ष पहले जो पशु-पक्षी थे, उनका अब कहीं दर्शन भी नहीं होता। प्राचीन काल में एक पशु था, जिसका नाम डाईनास था। वह सांपों और गिरगिटों के समान लघुकाय नहीं था; बल्कि बड़े-बड़े हाथी भी ऊंचाई में उसकी बराबरी नहीं कर सकते थे। उनमें कुछ तो मांस खाते थे, और कुछ घास-फूस तथा फल-मूल खाकर अपना जीवन व्यतीत करते थे। उनकी हड्डियां आज भी कहीं-कहीं भूमि के भीतर गड़ी हुई मिलती हैं।

कुछ वर्षों के पश्चात् जब धीरे-धीरे इस प्रकार के पशुओं का सर्वनाश हुआ, तो उनके स्थान पर दांत वाले पशुओं की सृष्टि हुई। जैसे गेंडा, हिप्पो, भालू, बाघ, हिरन और हाथी। इस समय के गेंडा, हिप्पो, बाघ, भालू, हिरन

और हाथी आदि पूर्वकाल के पशुओं से मिलते-जुलते अवश्य हैं, किन्तु फ़िर भी उनकी आकृति में एक विशेष प्रकार का अन्तर पाया जाता है।

विशालकाय डाइनास

प्राचीन काल में यदि मनुष्य आज की भांति लिखना-प
तो अवश्य उसके पास इन लुप्त होने वाले पशुओं का एक इ
दुःख तो इस बात का है कि, उस समय लिखने-पढ़ने को व
अक्षरों और भाषा का ज्ञान तक नहीं था। उनके पास जब
नहीं था, तब फ़िर पशुओं का इतिहास कैसे होता ?

संसार की बात छोड़ कर, कुछ देर के लिए अपने ही देश के पशु-पक्षियों पर विचार कर लो। आज से सैकड़ों वर्ष पहले हमारे देश में सिंहों की अधिकता थी, किन्तु आज कितने सिंह दिखाई देते हैं ? काठियावाड़ के आस-पास अवश्य कुछ सिंह पाये जाते हैं, किन्तु सिंहों की घटती हुई संख्या को देख कर यह कहना पड़ता है कि, कुछ दिनों के पश्चात् हमारे देश से सिंहों का नाम-निशान तक मिट जायगा।

हिमालय पर्वत की तराई के आस-पास 'विराटपण्डा' नामक एक प्रकार के भालू रहते हैं, किन्तु अब इनकी संख्या इतनी न्यून हो गई कि, गहन वनों के

ओकाप

भीतर भी कभी जल्दी नहीं दिखाई पड़ते। इसी प्रकार अफ्रीका के 'ओकाप' का भी अब दर्शन मिलना कठिन हो गया है। वन के सघन भाग में चाहे जितनी दूर चले जाओ, किन्तु कठिनाई से केवल दो एक 'ओकाप' दिखाई पड़ेंगे। गोरिल्लों के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार की बातें कही जा सकती हैं। वनों में जहां गोरिल्ला की अधिकता थी, वहां अब दस-पांच से अधिक नहीं दिखाई पड़ते। यदि गोरिल्ला भी कुछ दिनों में संसार से लुप्त हो जाय, तो आश्चर्य की बात क्या ?

बहुत पहले की बात छोड़ दो। केवल दो शताब्दी में ही देखते-देखते न जाने कितने पशु-पक्षी संसार से लुप्त हो गये। सील मछली का नाम तुमने सुना होगा। सत्रहवीं शताब्दी के बहुत पहले, सील से मिलती-जुलती एक और भी बहुत बड़ी मछली थी। उसे भी हम सील मछली ही के नाम से पुकारेंगे। उसके शरीर में बहुत से लंबे-लंबे कांटे होते थे। वह अधिकतर 'बेरिं' द्वीप के आस-पास पाई जाती थी, किन्तु सत्रहवीं शताब्दी के अन्त से अब वह कहीं नहीं दिखाई

डोडो चिड़िया और आलमिकि

देती। 'बेरि' द्वीप के आस-पास इस समय भी इसकी हड्डियां कई स्थानों के अजायबघरों में पाई जाती हैं।

सील ही के समान 'डोडो' नाम की चिड़िया भी संसार से लुप्त हो गई। यह रिऊनियन द्वीप के आस-पास पाई जाती थी। उसमें उड़ने की ताकत नहीं थी। उसे लोग पत्थरों से डराते थे, किन्तु फिर भी वह अपने स्थान से टस-से-मस नहीं होती थी। उसके शरीर पर मांस का एक बहुत बड़ा बोझ लदा रहता था। 'डोडो' की तरह एक और पक्षी था। उसका नाम 'अक' था। उसकी सूरत बहुत कुछ पेंगुइन से मिलती-जुलती थी। 'डोडो' की भांति उसमें भी उड़ने की क्षमता नहीं थी। वह अधिकतर उत्तरी मेरु और अमेरिका के आस-पास पाया जाता था। 1844 में उसे जीवित अवस्था में देखा गया था। उसके बाद आज तक फिर वह कहीं दिखाई नहीं पड़ा। जान पड़ता है, उसका भी संसार से लोप हो गया।

पूर्वी अफ्रीका के बड़े-बड़े मैदानों में एक बड़ा ही विचित्र पशु पाया जाता था। उसका नाम कोयागा था। उसकी आकृति बहुत कुछ जेब्रा से मिलती-जुलती थी, किन्तु उसके शरीर पर जेब्रा की तरह धारियां नहीं होती थीं। 1844 में वह जीवित अवस्था में देखा गया था। उसके बाद फिर उसे किसी ने नहीं देखा। 'आलमिकि' नाम का एक और बड़ा विचित्र जन्तु था। उसकी सूरत चूहे और 'छुछुन्दर' से मिलती-जुलती थी। 1871 के बाद फिर वह किसी को नहीं दिखाई पड़ा।

इसी प्रकार पृथ्वी के बहुत से प्राणी लुप्त हो गये। न जाने कितने और लुप्त हो जायेंगे। आज संसार में जितने प्रकार के जीव हैं, उन सबको भी न तो मनुष्यों ने देखा है, न उनके सम्बन्ध में कुछ जानकारी है। न जाने कितने कीड़े, पशु और पक्षी आज भी हमारी आंखों से बहुत दूर अपना जीवन बिताते हैं। देखना तो दूर रहा, उनके नाम भी नहीं मालूम हैं। अभी कुछ दिन हुए बोर्नियो के पास 'कोमोडा' द्वीप में एक ऐसा सांप निकला था, जिसे देख कर बड़े-बड़े वैज्ञा-
भी आश्चर्य में आ जाना पड़ा था। चीन के जंगलों में दो पूंछ वाले
पता चला है।

: 6 :

मछलियां, जो शिकार करती हैं

संसार के जीव-जन्तुओं में हर समय लड़ाई, संघर्ष और हत्या की धूम मची रहती है। ऐसी लड़ाई, ऐसा संघर्ष, और ऐसी हत्या तुम्हें मनुष्यों के संसार में कभी देखने को न मिलेगी। मनुष्य तो कभी ही कभी युद्ध और संघर्ष में रत होता है, किन्तु जीव-जन्तुओं का जीवन सदा संग्राम और संघर्ष की ही दशाओं में बीतता है।

जरा मछलियों के जीवन पर तो विचार करो। मछलियां जिस प्रकार अपने भोजन के लिए दूसरे जीवों का संहार करती तथा अपनी रक्षा के लिए अपने हथियारों को काम मे लाती हैं, उस तरह का उदाहरण तुम्हें मनुष्यों के जीवन में नहीं मिल सकता। इस दृष्टि से मछली संसार का एक अद्‌भुत जीव है।

यहां हम तुम्हें कुछ अद्‌भुत मछलियों के जीवन की कहानी सुनाने जा रहे हैं।

'सी उल्फ' नाम की एक भयानक मछली का हाल तुमने न सुना होगा। बहुत से लोग उसे 'नेकड़े' के नाम से भी पुकारते हैं। उसके दांत बड़े तेज़ होते हैं। वह दिन-रात अपने तेज दांतों से शाम्बुक और केकड़ों के शरीरों की चीर-फाड़ किया करती है। वह अपने तेज दांतों से जिसे एक बार पकड़ लेती है, उसके जीवन का फिर अन्त ही समझो। वह अपने ऊपर हमला करने वालों से अपनी रक्षा भी बड़ी सावधानी के साथ करती है। कुछ लोगों का कहना है, उसके दांत इतने मज़बूत होते हैं कि जहाजों के मोटे-मोटे लौह-लंगरों पर भी कभी-कभी उनके निशान बन जाते हैं। एक बार एक आदमी ने उसे तलवार से दो खंड कर

देने की चेष्टा की थी, किन्तु उसने सहसा तलवार अपने दांतों से पकड़ ली, और फिर उसे इतने जोर से दबाया कि, तलवार टूट कर दो टूक हो गई।

तुम यह जानना चाहते होगे कि, सी उल्फ रहती कहां है ? वह अधिकतर ठंडे देशों के गहरे समुद्रों में रहती है। उसका शरीर प्रायः दस-बारह फुट लम्बा होता है। शिकारी उस राक्षस मछली से सदैव डरते रहते हैं। वह शिकारियों की थोड़ी-सी असावधानी पर ही उन्हें जिस प्रकार अपने चंगुल में फांस कर कष्ट में डाल देती है, वह हृदय को दहला देने वाली बात है। एक शिकारी ने उसके सम्बन्ध में बताया है, जिस प्रकार मनुष्य दानव और दैत्यों से डरा करते हैं, उसी प्रकार जल के छोटे-छोटे जीव उस राक्षस मछली को देख कर थर्रा जाते हैं।

अब तुम्हारा आश्चर्य और भी अधिक बढ़ेगा, क्योंकि अब हम तुम्हें एक ऐसी मछली का हाल सुनाने जा रहे हैं, जो नेकड़े से भी बढ़कर अधिक भयंकर और प्राणि-हिंसक होती है। उस मछली का नाम 'हांगर' है। उसकी लम्बाई तीस-बत्तीस फुट के लगभग होती है। उसके मुंह में पांच-छः बड़े लम्बे-लम्बे दांत होते हैं। दांतों के अतिरिक्त उसके पास एक और भी अधिक भयंकर हथियार होता है, उसी पूंछ। पूंछ लगभग पांच फुट. लम्बी होती है। हांगर मछली का एक छोटा-सा बच्चा भी एक जवान मनुष्य को अपनी पूंछ से लपेट कर नीचे गिरा सकता है।

एक अंगरेज़ ने 'हांगर' की एक बड़ी अद्भुत कहानी लिखी है। उसने लिखा है, 'एक जहाज़ के मल्लाह समुद्र में उतर कर स्नान कर रहे थे। उसी समय एक हांगर उन मल्लाहों पर झपट पड़ी। सभी मल्लाह दौड़ कर जहाज़ के ऊपर चढ़ गये, किन्तु एक मल्लाह ऊपर न चढ़ सका। हांगर ने झपट कर उसे पकड़ लिया और क्षण मात्र में उसके शरीर को चीर-फाड़ डाला। एक दूसरा मल्लाह जो जहाज के ऊपर था, उस दृश्य को देख कर कांप उठा। वह हाथ में छुरा लेकर जल में कूद पड़ा। हांगर ने उस पर भी आक्रमण किया। थोड़ी देर तक
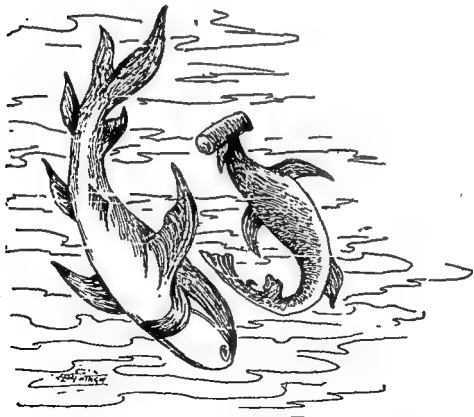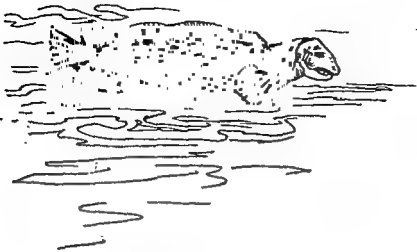
सी उल्फ (ऊपर) और हांमर (नीचे)

दोनों में खूब युद्ध हुआ। मल्लाह ने छुरे की मार से हांगर को अपने वश में तो कर लिया किन्तु वह स्वयं भी आहत हो गया।

हांगर की एक और भी जाति होती है। वह बाघ से भी अधिक हिंसक और भयानक होती है। वह अधिकतर गरम देशों के समुद्रों में रहती है। एक बार एक हांगर मछली पकड़ी गई थी। उसकी लम्बाई बीस फुट नौ इंच और मोटाई ग्यारह फुट छः इंच थी। उसका वज़न इक्कीस मन दस सेर के लगभग था। उसका पेट जब फाड़ा गया, तब उसमें से एक भैंस का शरीर, तीन बड़ी समुद्र की चिड़ियां, और दो मांस खाने वाले बड़े-बड़े कछुवे निकले थे।

एक प्रकार की और भी बड़ी भयानक मछली होती है। उस मछली के कान के पास एक तलवार होती है। तलवार के दोनों ओर बड़े-बड़े कांटे होते
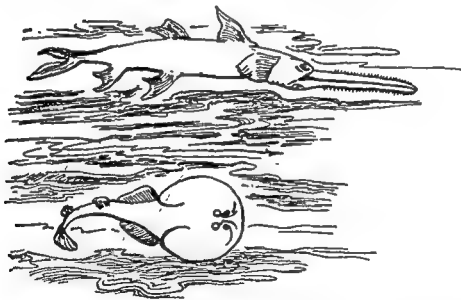
संगीन मुख और बिजली

हैं। उसकी लम्बाई चौबीस-पच्चीस फुट के लगभग होती है। वह हांगर ही की भांति अधिक भयानक और हिंसक होती है। वह बड़े-बड़े मज़बूत जहाज़ों को भी क्षण-मात्र में तोड़-फोड़ देती है। इसी लिए उसे बहुत से लोग 'संगीन

मुख वाली' मछली कहते हैं।

तुमने दांत वाली बड़ी-बड़ी मछलियों का हाल तो सुन लिया, अब हम तुम्हें ऐसी मछलियों का हाल सुना रहे हैं, जिनके न तो बड़े-बड़े दांत होते हैं, और न बड़े-बड़े आकार ही। फिर भी वे बड़े-बड़े जानवरों को क्षण-मात्र में अपने वश में कर लेती हैं। ऐसी मछलियों में 'टारपेडो' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी में उसे लोग 'बिजली मछली' के नाम से पुकारते हैं। उसकी पूंछ से सदैव एक बिजली-सी निकलती रहती है। जिस जानवर को उसकी पूंछ का धक्का लग जाता है, उसका फिर प्राणान्त ही हो जाता है।

बिजली मछली की तरह 'डायाडोल' भी देखने में बहुत छोटी होती है। उसके शरीर में छोटे-छोटे अनेक कांटे होते हैं। वह अपने कांटों की मार से बड़े-बड़े जानवरों को भी बेसुध कर देती है। कोई बड़ा जानवर जब उस पर आक्रमण करता है, तब वह अपने शरीर को इस भांति फुला लेती है, मानो फुटबाल हो। बेचारा बड़ा जानवर उसके उस स्वरूप को देख कर ऐसा भागता है कि, फिर उसका पता तक नहीं चलता।

व्यांग

एक और मछली होती है, जो समुद्र के ऊपर उड़ती है। उस मछली को उड़ने वाली मछली कहते हैं। उसकी पीठ पर चिड़ियों की भांति दो पंख होते

हैं। वह समुद्र से सौ गज की ऊंचाई तक उड़ती है। समुद्र के ऊपर उड़ कर ही वह बड़े-बड़े हिंसक जीवों से अपनी रक्षा करती है। 'व्यांग' नाम की एक और मछली होती है, जो देखने में बड़ी भयानक होती है। वह हिंसक तो नहीं होती, किन्तु उसके भयानक स्वरूप को देखकर ही बड़े-बड़े जीव उससे दूर भाग जाते हैं।

: 7 :

पेड़-पौधे जो, बड़े अनोखे होते हैं

तुम कभी यह सोच भी नहीं सके होगे कि, छोटे-छोटे पेड़-पौधे, जो न तो बोल सकते हैं, और न अपने हाथ-पैरों को इधर-से-उधर घुमा-फिरा सकते हैं, छोटे-छोटे कीड़ों को पकड़ कर खा जाते हैं। पेड़-पौधे जहां शिकारी होते हैं, वहां बहुत से छोटे-छोटे कीड़ों के साथ लेन-देन का व्यवहार भी करते हैं। लेन-देन की बात सुन कर कदाचित् तुम्हारे मन में आश्चर्य पैदा हुआ हो, किन्तु हम जो कह रहे हैं, वह सच है। कुछ पेड़ छोटे-छोटे कीड़ों को खाने के लिए एक प्रकार का मधु देते हैं, और वे छोटे-छोटे कीड़े इसके बदले उनका भी एक विशेष तरह से उपकार करते हैं। तुम जानते ही हो कि, फूल से फल उत्पन्न होता है। फूलों के भीतर एक प्रकार की धूलि होती है। छोटे-छोटे कीड़े उस धूलि को ले जाकर फलों के बीज में लपेट देते हैं। उस धूलि की ही शक्ति को पाकर फल बढ़ते और पकते हैं। अब तो तुम यह समझ गये होगे कि, छोटे-छोटे कीड़े पेड़-पौधों का किस प्रकार उपकार करते हैं।

ऐसा एक वृक्ष होता है, जिसका नाम यूका है। उसके पत्ते झाड़ की तरह हमेशा फैले रहते हैं। उसके पत्तों के ऊपर एक विशेष प्रकार का कीड़ा दिखाई देता है। उस कीड़े के बच्चे 'यूका' के फल को छोड़ कर और कुछ नहीं खाते। वह 'यूका' के फूलों के बीच में अपना अंडा देता है। जब फूलों से फल निकलते हैं, और पक कर फूट जाते हैं, तब वह कीड़ा भी जवान होकर बाहर निकलता है। उस कीड़े और यूका के फूलों-फलों का यह सम्बन्ध कितना सुन्दर और कितना प्राकृतिक है!

यूका वृक्ष और प्रकाश देने वाले फूल

यूका से भी अधिक एक फूल बड़ा लोभी और स्वार्थी होता है। वह देखने में अद्भुत होता है। जिस प्रकार देखने में अद्भुत होता है, उसी प्रकार

उसकी गन्ध भी बड़ी विकट होती है। ऐसा जान पड़ता है, मानो सड़ा हुआ मांस हो। गन्ध के लोभी छोटे-छोटे कीड़े जब उसके पास पहुंचते हैं, तो वे बिना किसी रोक-टोक के उसके भीतर चले जाते हैं। कीड़ों के भीतर पहुंचते ही फूल अपना मुंह बंद कर लेता है भीतर बंद कीड़े बाहर निकलने के लिए ज्यों-ज्यों दौड़-धूप करते हैं, त्यों-त्यों भीतर रहने वाली फूल की धूल उनके शरीर में और भी लिपटती जाती है। इसी दौड़-धूप से धूल बीच में जा लगती है, जिससे फल निकलता है। क्या इसे फूल का अनुचित स्वार्थ नहीं कहा जा सकता ?

एक और बड़ा अद्भुत वृक्ष होता है। उस वृक्ष का हाल कदाचित् तुमने आज तक न सुना हो ! वृक्षों के सम्बन्ध में अभी तक तुम यह जानते होगे कि, एक बार सूख जाने पर वृक्ष फिर जीवित नहीं हो सकते, किन्तु एक ऐसा भी वृक्ष होता है, जिसे तुम चाहे जितनी बार सुखा डालो, और फिर चाहे उसे जितनी बार जिला लो। लोग उस वृक्ष को अमर वृक्ष कहते हैं। वह चाहे कितना ही सूखा क्यों न हो, किन्तु जल में डाल देने से शीघ्र हरा हो जाता है। जब तक जल में रहेगा, हरा रहेगा, नहीं तो फिर सूख जायेगा।

कुछ पेड़-पौधों का स्वभाव बड़ा विचित्र होता है। लज्जावती केवल हाथ से छू देने ही से संकुचित हो जाती है। एक और ऐसा पौधा होता है, जिसे तुम हाथ से छू दो तो वह सांप की तरह फुफकार उठता है। कुछ पौधे ऐसे होते हैं, जो रात को सोते हैं, और सूर्योदय होते ही विकसित हो जाते हैं। तुम्हें यह सुन-कर अत्यन्त आश्चर्य होगा कि, ऐसा भी पेड़ होता है, जिसके फूल रात के अन्धकार में जुगनू की भांति चमकते हैं। यदि तुम दूर से उन फूलों को चमकते हुए देखो, तो तुम्हें कहना पड़ेगा कि, वे फूल नहीं दीपक हैं।

इसी तरह और भी न जाने कितने ऐसे पौधे पाये जाते हैं, जिनका जीवन बड़ा ही रहस्यपूर्ण है। उन सभी रहस्यपूर्ण पेड़-पौधों के सम्बन्ध में कुछ लिखना, कुछ कहना कठिन ही नहीं, बहुत कठिन है। वनस्पति-शास्त्र के एक विद्वान ने लिखा है—'मनुष्य सौ बार मर कर जन्म ले, और प्रयत्न करे, तो भी वह पेड़-पौधों का पूरा-पूरा ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता।'

: 8 :

सांप, जिनकी आंखों में जादू होता है

सांप कई प्रकार के होते हैं, किन्तु उनमें केवटा, गोखुरा और अमेरिका का व्याटेल सांप अधिक भयंकर होता है। संसार में ऐसा कोई प्राणी नहीं, जो इन सांपों को देख कर भयभीत न हो जाता हो। साधारण चूहों और मेढ़कों की तो बात ही क्या, बड़े-बड़े हिंसक और वनैले जीव भी इन सांपों को देख कर आकुल हो जाते हैं। वे जिस प्रकार उन्हें लपेट कर अपने चंगुल में फांस लेते हैं, उसे देख कर बड़े-बड़े साहसधारियों का भी हृदय दहल जाता है।

गोखुरा केवटा आदि अधिक क्रोधी होते हैं, किन्तु कहीं-कहीं मनुष्यों के द्वारा पाले-पोसे भी जाते हैं। लंका में एक मनुष्य रहता था। वह बहुत से गोखुरा सांप पाले हुए था। सांप रात में उसके घर के चारों ओर पहरा दिया करते थे। कभी किसी चोर में घर के पास जाने का साहस तक न होता था। सबसे अधिक आश्चर्य तो यह था कि, सांप उसके घर के मनुष्यों को कुछ भी नही कहते थे। उन सांपों और उसके घर के मनुष्यों में एक प्रकार की प्रीति-सी स्थापित हो गई थी।

अमेरिका के 'व्याटेल' सांप की आकृति अधिक भयंकर होती है। वह अमेरिका के बहुत से स्थानों में पाया जाता है। उसकी पूंछ के भाग को छोड़कर, और किसी भाग में चमड़ा नहीं दिखाई देता। केवल हड्डियां ही हड्डियां दिखाई पड़ती हैं। वह जब चलता है, तो उसकी हड्डियों से एक प्रकार का 'खड़-खड़' शब्द होता है। लोग उसे पकड़ नहीं सकते। वह बड़ा ज़हरीला होता है। एक बार उसने एक आदमी को जूते के नीचे से काट लिया था। वह मर गया।

कुछ देर के पश्चात् जब एक दूसरे आदमी ने उस जूते को पहना, तब वह भी विष के प्रभाव से मर गया।

संसार में जितने सांप हैं, उनमें किसी भी जाति के सांप न तो दल बना कर रहते हैं, न दल के साथ रास्ते में चलते हुए दिखाई देते हैं। किन्तु
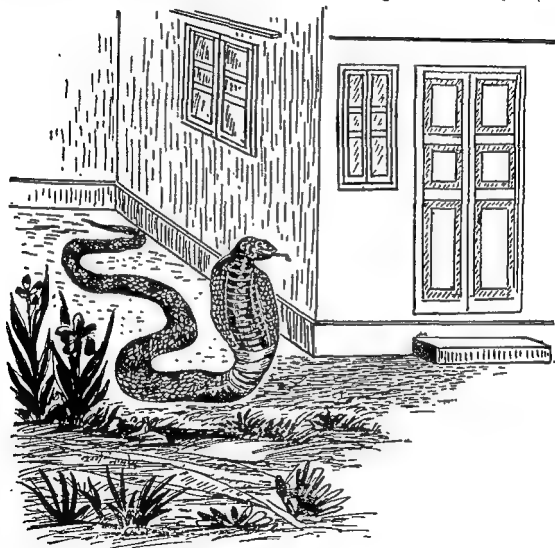
गोखुरा

'व्याटेल' में सबसे बड़ी अद्भुत बात यह है कि, वह कई स्थानों में दल बना कर रहता है। 'हाम वोलोड' नाम के एक सुप्रसिद्ध अंगरेज़ का कहना है, एक बार

वह कई आदमियों के साथ गायना प्रदेश के जंगल के भीतरी भाग में घूम रहा था। सहसा एक आदमी ने उसके पास जाकर उससे कहा, 'महाशय, चल कर देखिये तो! कैसा अद्भुत काण्ड है।' यह कह कर वह आदमी उसे अपने साथ लेकर चला। अभी वह थोड़ी ही दूर गया था कि, उसे 'व्याटेल' सांपों की एक बड़ी जमात किलोल करती हुई दिखाई पड़ी। सांपों की उस भयंकर जमात को देखकर उसे अपने आप की सुध-बुध नहीं रही। उसके शरीर से पसीना टपकने लगा।

पहाड़ी सांप भी बड़े भयंकर होते हैं। पहाड़ी सांपों में 'पहाड़ी बोड़ा' अधिक प्रसिद्ध है। वह जितना ही विशाल होता है, उतना ही उसके शरीर में असाधारण बल भी होता है। ऐसे थोड़े ही प्राणी होंगे, जो पहाड़ी बोड़े से हार न मान जाते हों। वह समूचे हिरन को भी निगल जाता है। बाघ और सिंह जैसे हिंसक जीवों के ऊपर आक्रमण करने में भी वह नहीं हिचकता। जब उसे भोजन नहीं मिलता, तो वह किसी नदी या झरने के किनारे छिप कर बैठ जाता है। कोई-न-कोई जीव पानी पीने के लिए किसी ओर से निकल ही आता है। वह अवसर पाकर उसे ऐसा लपेटता है कि, फिर उसके पेट ही में जाकर उसकी मुक्ति होती है।

एक बार एक साहब अपने कुत्ते को साथ लेकर अफ्रीका के जंगल में शिकार खेलने के लिए गया था। कुत्ता शिकार की खोज में, दौड़ता हुआ एक झाड़ी में जा पहुंचा और भय से कातर होकर सकरुण आवाज करने लगा। साहब ने उसे कई बार बुलाया, किन्तु वह न आया। आने को कौन कहे, वह तो और भी अधिक जोर-जोर से चिल्लाने लगा। कुत्ते की चिल्लाहट सुन कर साहब आगे बढ़ा। उसने झाड़ी के समीप पहुंच कर देखा कि, एक बहुत बड़ा पहाड़ी सांप कुत्ते को चारों ओर से जकड़े हुए है। साहब ने सांप के मस्तक में गोली मारी। सांप गोली की चोट से उत्तेजित हो उठा। वह कुत्ते को छोड़ कर साहब की ओर दौड़ा। साहब सांस छोड़ कर भाग चला, किन्तु सांप से बच कर निकल

जाना तो बड़ी मुश्किल बात है ! साहब रक्षा होते हुए न देख कर एक पेड़ पर चढ़ गया, किन्तु क्या सांप पेड़ पर चढ़ने से पीछे हट सकता था। वह भी शिकार के लालच में पेड़ के ऊपर चढ़ने लगा। साहब ने उसके मस्तक को लक्ष्य करके फिर दो गोलियां चलाईं। सांप की दोनों आंखें नष्ट हो गईं, किन्तु वह प्राण-हीन न हुआ। वह उसी अवस्था में पेड़ के ऊपर चढ़ने लगा, किन्तु नेत्रहीन होने के कारण वह साहब की ओर न जा सका। साहब ने अवसर पाकर फिर उस पर गोली चलाई, सांप प्राणहीन होकर भूमि पर गिर पड़ा। दैवयोग से यदि सांप की दोनों आंखें नष्ट न हो जातीं, तो न जाने वह रागी सांप उस दिन साहब की कौन-सी दुर्गति करता !

बहुत से विद्वानों का कहना है, सांपों की आंखों में एक प्रकार की जादू की शक्ति हुआ करती है। सांप जिसे एक बार देखते हैं, उसे अपने वश में कर लेते हैं। एक बार एक सांप ने एक साथ ही छः चिड़ियों को अपनी तीक्ष्ण दृष्टि के द्वारा अपने वश में कर लिया था। चिड़ियां सांपों को देख कर फड़फड़ाने अवश्य लगती हैं, किन्तु उनमें भाग जाने की शक्ति नहीं रह जाती। सांप यह देख कर अपने मन में अत्यन्त आनन्दित होता है। यदि वह भीतर ही भीतर गर्व का भी अनुभव करता हो तो आश्चर्य क्या ?

भूमि की ही भांति समुद्रों में भी सांप होते हैं। रोम के एक विख्यात इति-हास लेखक ने एक नदी के किनारे एक बहुत बड़ा सांप देखा था। बड़ी कोशिशों के बाद उस सांप का वध किया गया था। रोम में उस सांप का चमड़ा भेजा गया था। उसकी लंबाई अस्सी हाथ थी। मार्किन नाम के एक प्रसिद्ध ग्रन्थकार ने अपनी एक पुस्तक में बहुत से सामुद्रिक सांपों की चर्चा की है। सन् 1851 में एक जहाज एक समुद्र से होकर जा रहा था। उस जहाज के मल्लाहों ने देखा, एक बहुत बड़ा जीव अपने विशाल शरीर को ऊपर कर के सागर पर तैर रहा है। वह नीले रंग का था। उसकी पीठ के ऊपर नीले रंग के बहुत से निशान बने हुए थे। वह कोई अन्य जीव नहीं, सांप था। उस भयंकर सांप को देख कर

पहाड़ी सांप

सभी मल्लाह अत्यंत विस्मित हो उठे थे। उसकी लम्बाई अस्सी हाथ से भी अधिक रही होगी।

एक और ग्रन्थकार ने एक बहुत बड़े सांप का उल्लेख किया है। उसकी लम्बाई एक सौ तेंतीस हाथ और मोटाई पन्द्रह हाथ के लगभग रही होगी। वह महासर्प भेड़, बकरी और सुअर की तो बात ही क्या, कभी-कभी जहाज के मनुष्यों को भी खींच ले जाता था। एक दूसरे विद्वान ने अपनी एक पुस्तक में चार सौ हाथ लम्बे एक सांप का उल्लेख किया है। भयंकर सांप 1819, 1822 और 1826 में एक द्वीप के पास देखा गया था। कुछ लोगों ने उस सांप को और भी कई बार देखा था। उनका कहना है, उसकी परिधि छः हाथ से कम नहीं थी।

'पलिम' नाम के जहाज के मल्लाहों ने दक्षिणी अटलांटिक महासागर में एक महानाग देखा था। उनका कहना है, वह सांप नहीं, एक बहुत बड़ा राक्षस था। उसने अपने विशाल शरीर को समुद्र के ऊपर फेंक कर उसे झट समुद्र के गर्भ में छिपा लिया था। उसे देखकर सभी मल्लाहों के प्राण तक कांप उठे थे।

: 9 :

क्या तारे भी जन्म लेते हैं ?

संसार में सभी जन्म लेते और मरते हैं। चाहे जिसे देख लो, कोई तुम्हें मृत्यु और जीवन के बन्धन से मुक्त न दिखाई देगा। यदि केवल मृत्यु ही मृत्यु हो, तो एक न एक दिन संसार की वस्तुएं समाप्त हो जायें। इसके विपरीत यदि कोई मरे ही न, तो कुछ दिनों में संसार में किसी को रहने की जगह न मिले। इसीलिये तो जन्म और मृत्यु दोनों साथ ही साथ चलते हैं।

तुम्हें यह सुन कर आश्चर्य होगा कि, संसार की सभी वस्तुओं की तरह आकाश के तारे भी जन्म लेते और मरते हैं। यदि तारों का जन्म न होता, केवल मृत्यु ही मृत्यु होती, तो एक न एक दिन आकाश के सभी तारे बुझ जाते। इसीलिये तो संसार के बड़े-बड़े विद्वानों का कहना है कि, तारो का भी जन्म होता है।

तारों के जन्म और मृत्यु की बात सुनकर तुम्हारे मन में यह इच्छा पैदा होगी कि, तुम भी तारों के जन्म और उनकी मृत्यु को देखो, किन्तु क्या एक कीड़ा, जो जन्म लेने के दो ही घंटे बाद जवान और बूढ़ा होकर मर जाता है, किसी मनुष्य का जन्म और उसकी मृत्यु अपनी आंखों से देख सकता है ? नहीं देख सकता। इसी प्रकार तुम भी तारों का जन्म और उनकी मृत्यु अपनी आंखों से नहीं देख सकते, क्योंकि तारों की आयु के आगे मनुष्य की आयु एक कीड़े की आयु के समान होती है। एक तारे के जीवन में एक मनुष्य न जाने कितनी बार मरता और जीता है। फिर वह तारों के जन्म और उनकी मृत्यु को कैसे अपनी आंखों से देख सकता है ?

आकाश में जन्म लेते और मरते तारे

तारों की समानता में मनुष्य की आयु कम होती है, किन्तु मनुष्य बड़ा बुद्धिमान होता है। वह अपनी बुद्धि-शक्ति के द्वारा अदृश्य बातों को भी जान लेता है। बुद्धि ही के द्वारा ज्योतिषियों ने तारों के जन्म और उनकी मृत्यु का पता लगा कर बहुत कुछ बातें लिखी हैं। तुमने कदाचित् यह बात कभी न सुनी होगी कि, आकाश में कोई तारा दिखाई दिया, और वह दो-चार महीने तक चमक कर फिर अदृश्य हो गया। ज्योतिषियों का कहना है, गत सौ वर्षों में इसी तरह के सात-आठ तारे आकाश में जले और फिर बुझ गये। तारों के इस जन्म और मृत्यु पर स्वयं ज्योतिषियों को भी बड़ा आश्चर्य हुआ था।

इंग्लैण्ड में एक बहुत बड़े ज्योतिषी थे। उनका नाम अण्डर्सन था। सन् 1901 में उन्होंने ऐसे ही एक विचित्र तारे का पता लगाया था। जिस जगह वह तारा दिखाई पड़ा था, वहां पहले कुछ नहीं था। एक दिन रात में ढाई बजे के लगभग वह आकाश में चमक उठा। पहले उसका प्रकाश कम था, किन्तु चौथे या पांचवें दिन वह पहले से दस हजार गुना अधिक चमकने लगा। आश्चर्य तो यह है कि, वह अधिक दिनों तक आकाश में नहीं रह सका। कुछ दिनों के बाद ही धीरे-धीरे उसका प्रकाश कम होने लगा और सात-आठ दिनों में वह बिल्कुल बुझ-सा गया।

उसके पश्चात् दो और तारे इसी तरह जलते और बुझते हुए देखे गये थे। सन् 1876 और 1885 में दो तारे आकाश में दिखाई दिये थे। उनका वृत्तान्त और भी अधिक आश्चर्यजनक है। वे दोनों तारे एक महीने तक आकाश में दिखाई पड़े थे। वे सहसा नहीं बुझ गये थे। ज्योतिषियों का कहना है, दोनों तारे इस समय भी आकाश में हैं, किन्तु वे आंख से नहीं देखे जा सकते। यदि कोई दूरबीन ले कर देखें तो ये तारे भाप के ढेर के समान इस समय भी आकाश में जलते हुए दिखाई देंगे।

इससे यह ज्ञात होता है कि, सभी तारे जन्म लेते ही नहीं मर जाते। उनमें से बहुत से बच जाते हैं और सुदीर्घ काल तक बचे रहते हैं। तारों का जलना

और उनका बुझ जाना, तुम्हारे लिये एक साधारण घटना हो सकती है, किन्तु ज्योतिषी लोग इसे बड़ा महत्त्व देते हैं। एक बहुत छोटे तारे की ज्योति बहुत दूर तक आकाश में फैली रहती है। इसी तरह करोड़ों मील तक आकाश में प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है। फिर ज्योतिषी इसे साधारण कह कर कैसे छोड़ सकते हैं ? ज्योतिषियों ने बडे प्रयत्नों के बाद इस बात का पता लगाया है कि, आकाश के सूने स्थानों में ऐसा प्रकाश सहसा क्यों उत्पन्न हो जाता है।

इस संबंध में ज्योतिषियों का कहना है, तारे जब हवा के भीतर से होकर जोर से नीचे आते है, तो वे वायु से रगड़ उठते हैं। उसी रगड़ के कारण उनमें प्रकाश पैदा हो जाता है। तुमने अपनी आंखों से देखा भी होगा कि, जब दो पत्थर एक-दूसरे से रगड़े जाते हैं, तो उनमें से आग की चिनगारियां फूट निकलती है। इसी प्रकार तारों में भी प्रकाश और गर्मी रगड ही के कारण पैदा होती है। अब तुम यह कह सकते हो कि, इतने बड़े आकाश में तारों को इस प्रकार का धक्का कैसे लग सकता है ? शायद तुम यह नहीं जानते कि, आकाश में बड़े-बड़े पदार्थों का अभाव नहीं है। लाखों ठंडे तारे भूत की तरह आकाश में प्रतिक्षण दौड़ा करते है। उन तारों में गति को छोड़ कर और कुछ नही होता। जब दो मरे हुए ठंडे तारे आपस में एक-दूसरे से जोर से टकराते है, तो वे टूट-फूटकर चूर-चूर हो जाते है। उनसे एक प्रकार की आग भी जल उठती है। उन तारों के पिण्ड में जो मिट्टी, पत्थर और धातु इत्यादि चीजें मौजूद रहती है, वे उस आग से जल कर भाप बन जाती है। वही जलती हुई आग हमें दूर से नये तारों के रूप में दिखाई देती है।

मरे हुए ठंडे तारे जब आपस में टकराते हैं, तो उनका शरीर बिल्कुल चूर-चूर नही हो जाता। उनके जिस भाग में धक्का लगता है, केवल वही टूटता और जलता है। इसी लिये धक्का लगने से जो आग पैदा होती है, वह अधिक दिनों तक नही रहती। कुछ दिनो के बाद ही ठंडी होकर बुझ जाती है, किन्तु जब किसी ठंडे तारे का सारा शरीर किसी दूसरे ठंडे तारे के पूरे शरीर से टकराता

है, तो वे क्षण में ही चूर-चूर हो कर जल उठते हैं। उनसे आग पैदा होती है, वह घट तो जाती है, किन्तु लाखों वर्षों तक बराबर जलती रहती है।

ज्योतिषियों का कहना है, 'जितने नये तारों का जन्म देखा गया है, उनमें दो ही तारे इस समय आकाश में जल रहे हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि, इस तरह के केवल दो ही तारे आकाश में है। ऐसे तारे तो आकाश में करोड़ों की संख्या से भी अधिक होंगे, किन्तु वे दिखाई नहीं पड़ते। वे कभी दिखाई पड़ेंगे, ऐसी आशा भी नहीं है, क्योंकि तारों के जन्म और मृत्यु के खेल को देखना मनुष्य की शक्ति के बाहर की बात है।

: 10 :

वृक्ष, जो पानी बरसाते हैं

वृक्षों का जीवन बड़ा विचित्र होता है। कुछ वृक्ष ऐसे होते हैं, जो मांस खाते हैं। कुछ ऐसे होते हैं, जो गाते हैं। कुछ मनुष्यों की भांति अपने हाथों को फैलाते और चीजों को ग्रहण करते है। कुछ ऐसे भी होते हैं, जो पानी बरसाते हैं। यहां हम तुम्हें ऐसे ही अद्‌भुत वृक्षों का कुछ हाल सुनाने जा रहे हैं। इन वृक्षों का हाल जब तुम सुनोगे, तो तुम्हारे मन में एक प्रकार का कुतूहल और ज्ञान जागृत होगा।

कनारी द्वीपों में पानी नही बरसता। तुम्हारे देश की भांति वहां बड़ी-बड़ी नदियां और बड़े-बड़े सरोवर भी नही हैं। तुम्हें यह चिन्ता होगी कि, वहां के मनुष्य फिर अपना जीवन किस-प्रकार बिताते होंगे, तुम्हें यह जानना चाहिए कि, जिस प्रकृति ने वहां पानी की कमी की है, उसने ही जल का प्रबन्ध भी कर दिया है। कनारी द्वीप में स्थान-स्थान पर ऐसे वृक्ष है, जो रात को पानी बरसाते हैं। पानी इतना ज्यादा होता है कि, वहां के मनुष्यों को जल का कष्ट नहीं होता। इतना ही नहीं, वें वृक्षों से निकली हुई जल-धारा से अपने खेत भी सींचते हैं। पानी बरसाने वाले उन वृक्षों की ऊंचाई तीस-पैंतीस हाथ के करीब होती है।

अमेरिका में एक बड़ा ही विचित्र पेड़ होता है। उसके पत्ते सदैव उत्तर और दक्षिण की ओर रहते है। वहां के निवासी उन वृक्षों के पत्तों के द्वारा दिशाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं। प्रशान्त महासागर के टापुओं में एक और बड़ा विचित्र पेड़ होता है। उसमें खरबूजे के समान फल लगते हैं। उन फलों

के भीतर एक प्रकार का गूदा होता है। वह खाने मे बड़ा स्वादिष्ट होता है। वहां के निवासी उसे भून कर खाते हैं। उसका गूदा जब भूना जाता है; तो रोटी के समान सफेद और मुलायम हो जाता है। उसमें आठ महीने तक बराबर फल लगा करते है। वहां के निवासी उन्हीं फलों को खाकर अपना जीवन व्यतीत करते है। उसका छिलका कपड़ा बनाने के काम में आता है। वहां के लोग उस वृक्ष को कल्पवृक्ष ही के समान महत्व देते हैं।

अब दक्षिण अमेरिका के एक अद्भुत वृक्ष का हाल सुनो। उसके बीज में कई तहें होती है। पहली तह हाथी दांत की तरह सफेद होती है। बटन इत्यादि कई चीजो के बनाने के काम मे आती है। दूसरी तह में एक प्रकार का गूदा होता है, जो बहुत ही स्वादिष्ट और मुलायम होता है। उसके भीतर इतना पानी जमा रहता है कि, उसे तीन-चार मनुष्य पीकर अपनी प्यास बुझा सकते है। भारतवर्ष मे इसी तरह का नारियल होता है। पहले नारियल के वृक्ष को देख कर बहुत से विदेशियो ने आश्चर्य प्रकट किया था। अकबर बादशाह के मंत्री अबुलफजल ने बंगाल से लौट कर उससे कहा था, बंगाल के ऐश्वर्य पर क्या अभाव, वहां तो पेड़ो मे रोटियां फरती है और उनसे एक प्रकार का मीठा शरबत निकलता है।

दक्षिण अमेरिका में एक और बड़ा विचित्र पेड़ होता है। यदि तुम उसके तने मे छेद कर दो, तो उसमें से दूध के समान मीठा पौष्टिक रस निकलने लगता है। उसकी पत्तियां बडी चिमड़ी होती है। सवेरा होते ही वहां के निवासी कटोरा ले-लेकर उस वृक्ष के पास पहुंच जाते है। वे पेड़ के तने को कुल्हाड़ी से काट देते हैं। बस, फिर क्या? पेड़ बारी-बारी से अपने दूध से प्रत्येक आदमी का कटोरा भर देता है। दूध पीने में बड़ा स्वादिष्ट होता है। [illegible] से लोग उसे सुखा कर उसकी रोटियां भी बनाते है। एक दूसरे वृक्ष के [illegible] से लोग मक्खन निकालते है। मक्खन खाने मे बड़ा स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है।

पेड़ के तने से दूध निकालते लोग

मैडागास्कर द्वीप में एक वड़ा ही अद्भुत वृक्ष होता है। वह ताड़ के सदृश तीस फुट ऊंचा होता है। उसके पत्ते केले के पत्ते के समान चार से छः फुट तक लम्बे होते हैं। रेगिस्तानों के लिए वह वृक्ष बड़ा उपयोगी होता है। वह प्यासों की प्यास बुझता है और उन्हें ठंडक प्रदान करता है। उसके नीचे के डंठल में छेद कर देने से उसमें से पानी बहने लगता है। पानी पीने में वड़ा स्वादिष्ट होता है गर्मी के दिनों में वहां के निवासी उसके जल से अपना काम निकालते हैं। उसकी छाल चटाइयां बनाने के काम में आती है। बहुत से लोग उसके पत्ते से अपना घर छाते हैं।

फ्रांस, स्पेन और पुर्तगाल में एक बड़ी विचित्र जाति का वृक्ष होता है। उसकी छाल से टाट बनाया जाता है। जब वह पांच वर्ष का हो जाता है, तो लोग उसकी छाल निकालते है। इससे उस वृक्ष को कोई हानि नहीं होती। उलटे वह अधिक दिनों तक जीवित रहता है। वह तीस से चालीस फुट तक लम्बा होता है। इस जाति के पेड़ डेढ़ सौ वर्ष तक की आयु के पाये गये हैं।

अभी थोड़े दिन हुए, रूस में एक ऐसे पेड़ का पता चला है, जिससे संगीत निकलता है। उसके संगीत का एक खास समय होता है। वैज्ञानिक उसके सम्बन्ध में छान-बीन कर रहे हैं।

: 11 :

मनुष्य, जो बर्फ में रहते हैं

मनुष्य संसार का प्रमुख प्राणी है; दूसरे शब्दों में मनुष्य से संसार का प्रत्येक काम चलता है। इतना ही नहीं, मनुष्य ही किसी न किसी रूप में प्रकृति की सुरक्षा भी करता है। मनुष्य अधिक शक्तिशाली और मेधावी होता है। कुछ लोगों का कहना है, प्राचीन काल के मनुष्य आज के मनुष्यों से अधिक बली और अधिक डील-डौल वाले होते थे। इसी लिये कुछ लोग आज के ठिगने और कमज़ोर मनुष्यों को देख कर उन पर आश्चर्य प्रकट किया करते हैं। वास्तव में बात ठीक भी है। सचमुच प्राचीन काल में मनुष्य अधिक बली और अधिक डील-डौल वाले हुआ करते थे।

प्राचीन काल की बात छोड़ दो। इस समय भी हिमालय की बर्फ-गुफाओं में तुम्हें कुछ ऐसे मनुष्य मिलेंगे, जो अधिक बलशाली और अधिक लम्बे डील-डौल के होते हैं। यदि तुम उन मनुष्यों को देखो, तो तुम्हें अपने ऊपर भी आश्चर्य होने लगेगा।

वे मनुष्य हिमालय की कन्दराओं में निवास करते हैं। उनका आकार बड़े-बड़े दैत्यों के समान होता है। सीमा पर रहने वाले तिब्बत और नेपाल के आदमी उनसे बहुत डरा करते हैं। उनका रंग सफ़ेद होता है। शरीर पर बड़े-बड़े बाल होते हैं। उन्हें लोग 'हिम का देव' या 'मेंगू' के नाम से पुकारते हैं। वे देखने में जिस प्रकार भयानक होते हैं, उसी प्रकार उनके काम भी बड़े भयानक होते हैं। बड़े-बड़े बहादुर शिकारी तक उनकी सूरत देख कर के ही कांप उठते हैं।

हिमालय की कदराओं का निवासी मेंगू 'हिम दानव'

विलायत में एक अखबार निकलता है। उसका नाम 'डेली टेलीग्राफ़' है। एक बार उसका एक संवाददाता वर्फ में रहने वाले मनुष्यों का पता लगाने के लिये गया। उसने हिमालय के भयंकर से भयंकर स्थानों की यात्रा की। जंगली जातियों से मिल कर मेगुओं का पता लगाया। जिससे भी उसने पूछा, उसी ने कहा, मेगू बड़े भयंकर होते हैं। क्या स्त्री क्या पुरुष, सभी आठ से लेकर बारह फुट तक लम्बे होते है। वे हिमालय की ऊंची चोटियों पर निवास करते हैं। जिन चोटियों पर रहते हैं, उनकी ऊंचाई तेरह हज़ार से लेकर बीस बाईस हजार फुट तक है। उनकी संख्या अधिक नहीं है। वे एक स्थान में एकत्र होकर नहीं रहते, स्थान-स्थान पर छिटके रहते हैं। पुरुष जितने भयंकर होते हैं, उतनी ही भयंकर स्त्रियां भी होती हैं। वे मनुष्य अवश्य है, किन्तु उन्हें मनुष्यों का काल समझना चाहिए।

जब कभी कोई साधारण आदमी, उन मेगुओं के हाथ लग जाता है, तो उनकी बन आती है। वे उसे देख कर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। उसे अपने तेज हाथों से चीर कर दूर फेंक देते है। हिमालय के आस-पास रहने वाले मनुष्यों में जब कभी कोई गायब हो जाता है, या किसी की लाश दो टुकड़ों के रूप में फेंकी हुई मिलती है, तो लोग यही समझते हैं कि, यह काम मेगुओं का है, किन्तु मेगू जाति के वे राक्षस-मनुष्य बहुत प्रयत्न करने पर भी कभी सामने नहीं दिखाई देते।

मेगू जाति के उन मनुष्यों के मुठभेड़ प्रायः गड़रियों और चरवाहों से हो जाया करती है। गर्मी के दिनों में चरवाहे भेड़-बकरी चराने के लिए पहाड़ की ऊंची चोटियों पर जाया करते हैं। कभी-कभी कोई 'मेगू' भेड़ों की गोल में घुस आता है। वह किसी भेड़ पर आक्रमण नहीं करता। भेड़ें भी उसे देख कर भय-भीत नहीं होतीं। एक अंगरेज ने इस संबंध में एक बड़ी मजेदार कहानी लिखी है। उसने लिखा है—'एक बार चार गड़रिये अपनी भेड़ों के साथ पहाड़ की ऊंची चोटियों पर चढ़ गये। चरवाहों को पहाड़ से आती हुई गूंजती आवाज़

सुनाई पड़ी । उन्होंने समझा, कोई दूसरा चरवाहा उन्हें पुकार रहा है। अतः उन्होंने भी उत्तर देना आरंभ किया । अभी कुछ ही क्षण बीत पाये थे कि, दैत्य के समान बड़ा लम्बा-चौड़ा एक आदमी उन चरवाहों के पास जाकर खड़ा हो गया । उसे देखते ही चरवाहों के होश उड़ गये । वे अपने-अपने प्राण लेकर भाग चले । उनके झोंपड़े बहुत करीब ही थे । वे भाग कर अपने झोंपड़ों में घुस गये और भीतर से कुण्डी बन्द कर ली, किन्तु मेगू ने उनका पीछा नहीं छोड़ा । वह उन्हें खदेड़ता हुआ उनके झोंपड़ों तक गया । पहले उसने झोंपड़े को खोलने की चेष्टा की । जब झोंपड़ा न खुला, तो वह झोंपड़े को पकड़ कर ज़ोर से हिलाने लगा । झोंपड़े का तख्ता टूट गया । उसने अपना एक हाथ झोंपड़े के भीतर डाल दिया । भयभीत चरवाहों ने उसके रोयेंदार हाथ पर मक्खन रख दिया । उसने अपना हाथ बाहर खींच लिया । उसने बड़े चाव से, मक्खन चाटते हुए, अपना रास्ता लिया ।

इसी तरह की और भी बहुत-सी कहानियां मेगू मनुष्यों के संबंध में कही और सुनी जाती हैं, पर अभी तक कोई हिम-दानव कभी पकड़ा नहीं गया । अंगरेज़ शिकारियों ने बार-बार इसके लिये प्रयत्न किए, पर वे सफल नहीं हुए। पकड़ने को कौन कहे, वे तो उन्हें देख भी नहीं पाये। हां, उनके पैरों के निशान उन्हें अवश्य मिले हैं । उन्होंने उन निशानों को देखकर ही, हिम-दानवों के बारे में बड़ी अनोखी-अनोखी बातें लिखी हैं ।

: 12 :

जो, छोटे होने पर भी, बड़े बलवान होते हैं

चींटी तुमने देखी होगी ! तुम उसे साधारण जीव समझ कर चाहे उसकी उपेक्षा कर दो, किन्तु प्राणीशास्त्र के विद्वान उसे बड़ा महत्व देते हैं। उनका कहना है, छोटे जीवों में चींटी से बढ़कर अधिक साहसी और अधिक परिश्रमी कोई नहीं होता। चींटी जितनी ही परिश्रमी होती है, उतनी ही उसके जीवन की कथा भी रोचक होती है। जब तुम चींटी के जीवन की कथा सुनोगे, तो तुम्हारे हृदय में भी चींटी के प्रति सम्मान जागृत होगा।

चींटी का आकार तो बहुत छोटा होता है, किन्तु जब तुम उसके अध्यवसाय, साहस, और स्वजाति-प्रेम पर विचार करोगे, तो तुम्हें आश्चर्य करना पड़ेगा। वह चाहे जहां भी रहे, उसके साथ एक बहुत बड़ा दल रहता है। एक-एक दल में हज़ार-हज़ार चींटियां तक देखी जाती हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि, इतनी बड़ी संख्या में होने पर भी वे एक-दूसरे से भली भांति परिचित रहती हैं। उनमें हिंसा की प्रवृत्ति अधिक होती है। यदि कभी किसी कारणवश कोई चींटी किसी दूसरी चींटी के घर में चली जाती है, तो फिर उसके प्राणों पर बन आती है। एक बहुत बड़ा तूफान-सा उठ खड़ा होता है, किन्तु जब बहुत दिनों के पश्चात भी कोई भूली हुई चींटी अपने दल में पहुंच जाती है, तो दल की दूसरी चींटियां आदर से उसे अपने दल में मिला लेती हैं। अपने दल की चींटी को पहचानने में चींटियों को कभी धोखा नहीं होता।

चींटी भूमि के नीचे अपने नगर का निर्माण करती है। नगर के घर कई भागों में विभक्त रहते हैं। किसी में अण्डे रहते हैं, किसी में बच्चे। किसी में

खाने-पीने की चीज़ें रहती है और किसी में रोगियों तथा पीड़ितों की सेवा-शुश्रूषा होती है। प्रत्येक नगर में स्त्री-पुरुषों के अतिरिक्त चींटियों का एक और

खाद्य-पदार्थों का संचय करती चींटियां

दल रहता है। उस दल को नौकरों का दल कहते हैं। उनका काम होता है नगर की सभी चींटियों की सेवा करना। घर का सारा काम-काज वही चींटियां [illegible]। वही अंडों को देखती है, बच्चों की रक्षा करती है, घर-द्वार साफ़ करती

और जब घर बदलना होता है, तो समुचित स्थान का पता लगा कर घर बदलने का प्रबंध भी करती है।

चीटियां विशेष युद्ध-प्रिय होती है। किसी विशेष कारण के न होने पर भी, केवल लूट-पाट की इच्छा से, अपने दलों में युद्ध आरम्भ कर देती हैं। नगर की रक्षा के लिए द्वार पर एक पहरेवाला पहरा देता रहता है। जब कोई शत्रु आक्रमण करता है, तो वह दौड कर भीतर उसकी सूचना देता है। उसके बाद तो हजारों वीर-योद्धा मोर्चा लेने के लिए बाहर निकल पड़ते है और देखते-ही-देखते घनघोर संग्राम आरम्भ हो जाता है। यह सग्राम शीघ्र नही समाप्त होता। कई दिनों तक लगातार चलता रहता है। जब कभी कोई दल शीघ्र हार मान जाता है, तो युद्ध दो-एक घटे के बाद ही बन्द हो जाता है। युद्ध मे जो दल जीतता है, वह हारे हुए दल के घर में प्रवेश करता है। उसका हारे हुए दल के अडों और बच्चों पर अधिकार हो जाता है। वह उन्हें अपने घर लाकर उनका प्रेम से पालन-पोषण करता है। जब वे बड़े हो जाते है, तो उन्हे सेवा का काम सुपुर्द किया जाता है।

मनुष्य के समान चीटिया भी अपने भविष्य की चिन्ता करती है। वे भविष्य के लिए खाद्य-पदार्थ सचय करती है। अमेरिका में एक प्रकार की चीटी होती है। वह जिस तरह खाद्य-पदार्थ का सचय करती है, सुन कर आश्चर्य मे आ जाना पड़ता है। वह अपने दल की बहुत-सी चींटियों को अलग कर, चतुराई से उनकी पाचन-शक्ति नष्ट कर डालती है। उसके बाद चारों ओर से खाने की चीजें लाकर उन्हे खिला दी जाती हैं। पाचन-शक्ति नष्ट होने के कारण उनका पेट धीरे-धीरे स्थूलाकार-सा हो जाता है। जब भोजन नही मिलता, तो चींटिया अपने उसी भंडार से अपना काम चलाती है।

इससे भी बढ़कर एक और आश्चर्य की बात है कि, जिस प्रकार मनुष्य दूध के लिए गाय-भैस पालते हैं, उसी प्रकार चीटियां भी दूध के लिए अपने पास एक प्रकार का कीड़ा पालती है। उस कीड़े के शरीर का रस बहुत ही स्वादिष्ट

होता है। उसके पीछे की ओर दो वड़े-बड़े सूंड़ वाहर निकले रहते हैं। चींटियां उसी सूंड़ को अपने मुख में डाल कर उसका दूध पीती हैं। वहुत से लोग उस कीड़े को चींटियों की गाय कहते हैं। चींटियां जव उस कीड़े को देखती हैं, तव उसे गाय-भैंस की भांति ही अपने पास वांध लेती हैं।

अफ्रीका के जंगलों में एक प्रकार की चींटी पाई जाती है; जिसकी दुष्टता की वातों को सुन कर शरीर सिहर उठता है। जव उस चींटी का दल शिकार की खोज में निकलता है, तो छोटे-छोटे जीवों की तो वात ही क्या, बड़े-वड़े जीव भी भयभीत होकर भाग जाते हैं। विख्यात पर्यटक 'डूशेल' साहव ने एक स्थान पर लिखा है, 'कई वार उस चींटी के भय से उन्हें अपना घर छोड़ कर जल में आश्रय लेना पड़ा था।' वह चींटी अपने दल के साथ जिस घर में प्रवेश करती है, उसके सभी कुटुम्वियों को जान से मार डालती है।

वह चींटी अपने दल के साथ अफ्रीका के जंगलों में रात-दिन घूमा करती है। बड़े-वड़े हाथी और गोरिल्ले भी उसके डर से भागते हुए देखे गये हैं। एक वार वह जिसे जोर से पकड़ लेती है, फिर उसका वचना मुश्किल हो जाता है। जंगल में रहने वाली निग्रो जाति के मनुष्यों का कहना है, कुछ दिनों पूर्व जिस मनुष्य को कठोर दण्ड देना होता था, वह निर्दयतापूर्वक उन चींटियों के मार्ग में फेंक दिया जाता था।

चींटी की तरह मकड़ी भी कई प्रकार की होती है। कुछ का आकार तो मसा और मच्छर से भी अधिक छोटा होता है, किन्तु कुछ वड़े-वड़े केकड़ों-से भी अधिक वड़ी होती हैं। मकड़ी की कोई जाति जाल डाल कर शिकार करती है, और कोई दूसरे उपायों से भी भोजन प्राप्त करती है। जो मकड़ी जाल वुनना जानती है, उसके कौशल को देख कर कभी-कभी आश्चर्य में आ जाना पड़ता है। जहां सरलता से शिकार मिलने की सम्भावना होती है, वहीं वह अपना जाल डालती है, और जाल के वीच में इस प्रकार छिप कर वैठ जाती है कि, वेचारे जीव-जन्तु उसे देख भी नहीं पाते। जव कोई छोटा जीव उसके जाल में पड़ता

हैं, तो जाल थर-थर कांप उठता है। बस फिर क्या ? जाल के बीच में छिप कर बैठी हुई मकड़ी उसे उछल कर पकड़ लेती है और चट कर जाती है।

मैडागास्कर और मारिशस इत्यादि गर्म द्वीपों में बड़े-बड़े आकार की भी मकड़ियां पाई जाती हैं। जिस प्रकार उनका आकार बड़ा होता है, उसी प्रकार वे बड़े-बड़े जाल भी बुनती हैं। वे शिकार पकड़ने के लिए इतनी संख्या में जाल बुनती हैं कि, दृश्य ही बदल जाता है। लंका में एक प्रकार की मकड़ी होती है, जिसके जाल में गिरगिट, चूहे और सांप तक फंस जाते हैं। उसके जाल का सूत इतना मज़बूत होता है कि, यदि तुम उसे अपनी नाक और मुंह पर रगड़ो, तो नाक और मुंह से खून निकलने लगेगा।

मकड़ियों में जो जाल बुनना नहीं जानतीं, वे शिकारियों की तरह दौड़-धूप करके अपना शिकार पकड़ती हैं। बहुत-सी मकड़ियां सिंह की तरह उछल कर अपने शिकार की पीठ पर जा बैठती हैं। मकड़ियां बड़ी विषैली होती हैं।
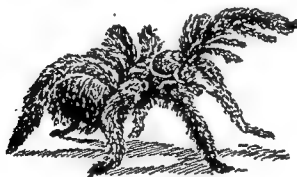
बड़ी मकड़ी

छोटे-छोटे जीव उनके विष से तुरन्त मर जाते हैं। किसी-किसी मकड़ी का विष इतना तेज़ होता है कि, मनुष्य तक मर जाते हैं। सुनने में आता है कि, इटली के किसी स्थान में एक ऐसी मकड़ी पाई जाती है, जिसके काटने से मनुष्य मतवाला होकर नाचने-गाने लगता है। बहुत से लोग इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे, किन्तु आश्चर्यमयी प्रकृति में क्या नहीं सम्भव है ?

: 13 :

पहाड़, जो आग उगलते हैं

ज्वालामुखी पहाड़ का नाम तुमने सुना होगा ! उसके मुख से आग, लावा और राख निकलती है । ज्वालामुखी पहाड़ जिस देश में अधिक होते हैं, वहां के निवासियों का जीवन सदैव संकटों में रहता है; क्योंकि यह कोई नहीं जानता कि, उन पहाड़ों से कब आग, धुआं और राख निकलने लगेगी । जब उन्हें भड़कना होता है, तो भड़कने के पहले बड़े ज़ोर का शब्द होता है । शब्द इतना ज़ोरदार होता है कि, पृथ्वी तक कांप उठती है । पृथ्वी के उसी कम्पन को लोग भूडोल या भूचाल कहते है ।

अभी कुछ दिन हुए, जापान में एक ऐसा ही ज्वालामुखी पहाड़ भड़क उठा था । उसका परिणाम यह हुआ कि, पृथ्वी कांपने लगी, समुद्र को लहरें बड़ी ऊंचाई तक ऊपर उठ गईं । बहुत से जहाज़ तहस-नहस हो गये, बहुत से नगर, गाव और क़स्बे सैदा के लिये नष्टभ्रष्ट हो गये । न जाने कितने मनुष्य और पशु मौत के मुख में चले गये । उस भूचाल से जापान की जो क्षति हुई थी, वह आज तक पूरी नहीं की जा सकी ।

यदि तुम जापान जाओ, तो वहां तुम्हें एक भी मकान ईंट-पत्थर का न मिलेगा । तुम जानते हो, इसका कारण क्या है ? जापान में ज्वालामुखी पहाड़ अधिक हैं । ज्वालामुखी पहाड़ों के अधिक होने से वहां भूचाल अधिक आया करते हैं । तुम जानते ही हो कि, जब भूचाल आता है, तो ईंट-पत्थर के मकान गिर पड़ते हैं और धन-जन की विशेष हानि होती है । जापान वाले उसी हानि से बचने के लिये लकड़ी के मकान बनाते हैं ।

इटली में एक ज्वालामुखी पहाड़ है। उसका नाम विस्यूवियस है। आज से दो हज़ार वर्ष पहले किसी को यह बात मालूम नहीं थी कि, विस्यूवियस ज्वाला-

विस्यूवियस ज्वालामुखी
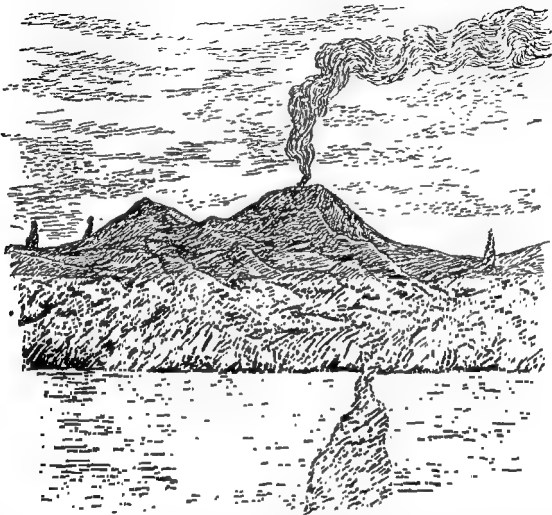
मुखी पहाड़ है। इसी लिए विस्यूवियस के आसपास सुन्दर नगर और गांव बस गए थे। एक दिन रात में जब उन गांवों और नगरों में रहने वाले लोग सुख की नींद सो रहे थे, विस्यूवियस भड़क उठा। उसके मुख से आग, लावा और राख निकलने लगी। आग, लावा और राख इतने ज़ोरों से निकलने लगी कि, देखते ही देखते उसके पास के बड़े-बड़े नगर तक राख के ढेरों के नीचे दब गए।

छोटे-छोटे गांवों की तो बात ही क्या ? उन नगरों का नाम पाम्पियाई और हरक्यूलेनियम था। उन दिनों वे दोनों नगर वैभव और समृद्धि में सर्वश्रेष्ठ समझे जाते थे, किन्तु उनका वैभव और उनकी समृद्धि सदा के लिए गर्म राख के ढेर में दब गई।

लोगों का कहना है, विस्यूवियस इस समय भी अधिक गरम रहता है। इतना गरम रहता है कि, कोई मनुष्य बिना मोटे तल्ले का जूता पहने हुए उसके ऊपर नहीं जा सकता। विस्यूवियस की तरह अमेरिका, जावा और सुमात्रा में भी ज्वालामुखी पहाड़ हैं। हमारे देश में भी ज्वालामुखी पहाड़ हैं, किन्तु अभी उनका ठीक-ठीक पता नहीं चल सका है। बिहार और क्वेटा के भूकम्प से लोग यह कहने लगे हैं कि, हमारे देश में भी ज्वालामुखी पहाड़ हैं। कौन जाने ये किस समय भड़क उठेंगे ?

तुम्हें यह सुन कर अत्यन्त आश्चर्य होगा कि, चिर प्राचीन काल में पृथ्वी उसी प्रकार चमकती थी, जिस प्रकार सूर्य चमकता है। वह आग के गोले के समान दिन-रात दहकती रहती थी। न उस पर मनुष्य बसते थे, न पशु। पेड़-पौधे भी कहीं दृष्टिगत नहीं होते थे, किन्तु धीरे-धीरे पृथ्वी ठंडी होने लगी। पृथ्वी का जो भाग ठंडा हुआ, उसमें मनुष्य रहने लगे। पृथ्वी का ऊपरी भाग तो ठंडा हुआ, किन्तु भीतरी भाग में ज्यों की त्यों उष्णता बनी रही। इसी से पृथ्वी के भीतर जितनी चीजें हैं, वे सब पिघले हुए रूप में पाई जाती हैं। कभी जब समुद्र का पानी पृथ्वी के नीचे रहने वाली उष्णता में पहुंच जाता है, तो वह भाप बन कर भड़क उठता है। पृथ्वी फट जाती है और पृथ्वी के गर्भ से आग, लावा तथा राख निकलने लगती है। धीरे-धीरे वही ज्वालामुखी पहाड़ बन जाता है।

ज्वालामुखी पहाड़ समुद्र के किनारे अधिक होते हैं। उनका भयंकर वेग भी प्रायः समुद्र के ही किनारे देखा जाता है। इसका कारण यह है कि, समुद्र के किनारे पानी को पृथ्वी के भीतर के अग्निकुण्डों में पहुंचने में सरलता होती है। ऊपर यह कहा जा चुका है, जब समुद्र का जल पृथ्वी के भीतर की अग्नि में

पहुंचता है, तो वह भाप बनकर बड़े ज़ोर से भड़क उठता है और पृथ्वी के पर्दे को चीरता हुआ बाहर निकल पड़ता है। उसके आस-पास जो नगर रहते हैं, वे पृथ्वी के तल से निकलती हुई राख के नीचे सदा के लिए दब जाते हैं। इसी तरह न जाने कितने नगर राख के नीचे दब गये हैं, न जाने अभी कितने दब जायेंगे !

कुछ लोगों का कहना है, पहले ज्वालामुखी पहाड़ अधिक थे, किन्तु ज्यों-ज्यों पृथ्वी सर्द होने लगी, त्यों-त्यों ज्वालामुखी पहाड़ों की संख्या भी कम होने लगी। भू-शास्त्र के विद्वानों का कहना है, जब पृथ्वी बिलकुल सर्द हो जाएगी, तब एक भी ज्वालामुखी पहाड़ न दिखाई देगा। इस समय संसार में तीन सौ से अधिक ज्वालामुखी पहाड़ है, किन्तु उन पहाड़ों में इटली का विस्यूवियस, अमेरिका का कोटो-पैक्सी और हवाई द्वीप का किलौवा सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

: 14 :

मणि, जो सांप के मुंह में रहती है

सांप की मणि बड़ी अद्‌भुत वस्तु है। संसार में बहुत कम ऐसे लोग होंगे, जिन्हें सांप की मणि देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा। एक बंगाली ने सांप की मणि की एक बड़ी अद्‌भुत कहानी लिखी है। तुम्हारे मनोरंजन और ज्ञान-वर्द्धन के लिए हम उसे यहां दे रहे हैं। उसे पढ़ कर तुम यह समझ सकोगे कि प्रकृति की गोद में कैसी विचित्र-विचित्र वस्तुएं उत्पन्न होती हैं।

कलकत्ता से कोलम्बो बहुत दूर है। समुद्र में जहाज पर बैठ कर सात-आठ दिनों तक जाना होगा। एक तो सुदूर देश, दूसरे असीम सागर-मार्ग, किन्तु फिर भी कोलम्बो जाना ही पड़ा। डाक्टर का आदेश था, यदि वायु-परिवर्तन के लिए विदेश न जाओगे, तो स्वास्थ्य न सुधरेगा। स्वयं मुझे भी बहुत दिनों से समुद्र में यात्रा करने की बड़ी इच्छा हो रही थी। अब तो स्वर्णपुरी लंका के दर्शन की अभिलाषा भी हृदय में जाग उठी। अतः मैं जहाज पर चढ़ कर कोलम्बो के लिए चल पड़ा।

जहाज धीरे-धीरे चलने लगा। आठवें दिन जब प्रातःकाल सूर्य की लालिमा पूर्व में जाग उठी, तो हमारी आंखों के सामने स्वर्णपुरी लंका का किनारा दिखाई देने लगा। तट पर विशद बालुकामय भूमि, उसकी गोद में पाले की राशि के समान समुद्र का शुभ्र फेन, वृक्षों की पंक्ति, उसके पीछे बादलों की कालिमा में पर्वत की श्रेणियां। कैसा अपूर्व दृश्य था! हम उसी सुन्दर दृश्य को देखते-देखते आगे बढ़े। करीब पांच बजे कोलम्बो पहुंच गये।

कोलम्बो में हमारे दूर के एक भाई व्यवसाय के उद्देश्य से रहते थे। उसका

नाम निरंजन बाबू है। उन्हें मेरे आने की खबर पहले से मिल चुकी थी। इस लिए जहाज़ जिस समय बन्दरगाह पर पहुंचा, निरंजन बाबू अपने पुत्र के साथ दिखाई पड़े। वे मुझे बड़े आदर के साथ घन ले गये। मुझे देख कर निरंजन बाबू की वृद्धा माता, उनकी स्त्री, और उनकी कन्या ने अत्यन्त हर्ष प्रकट किया। मैं इस नये परिवार के प्रेम को पाकर भीतर-ही-भीतर गद्गद हो गया।

कोलम्बो पहुंचे हुए चार-पांच दिन हो गये थे। एक दिन संध्या समय हम आपस में बातें कर रहे थे। बातों ही बातों में सिंहल द्वीप के मोतियों की चर्चा छिड़ उठी। यह तो तुम जानते ही हो कि, सिंहल द्वीप के मोती अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। मोती ही नहीं, वहां पद्मराग मणि, इन्द्रनील और प्रवाल भी विशेष रूप से पाये जाते हैं। निरंजन बाबू ने बातों के सिलसिले में कहा, "इन वस्तुओं के अतिरिक्त यहां एक और भी ऐसी वस्तु होती है, जिसे न तो तुमने कभी आंखों से देखा होगा, न कभी उसका कुछ हाल ही सुना होगा। मेरी बात सुन कर तुम्हें आश्चर्य हुआ होगा, किन्तु मैं तुमसे पूछता हूं, क्या तुमने कभी सांप की मणि देखी है ? यहां सांप की मणियां भी पाई जाती हैं।"

सांप की मणि के सम्बन्ध में मैंने कहानियां अवश्य सुनी थीं, किन्तु कभी उसे देखने का अवसर नहीं मिला था। इसलिए पहले तो निरंजन बाबू की बातों पर मुझे विश्वास नहीं हुआ, किन्तु जब उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से सांप को मणि दिखाने का मुझे आश्वासन दिया, तो मुझे भी विवश होकर विश्वास करना ही पड़ा।

निरंजन बाबू ने कहा, "सिंहल में सांपों का अधिक भय है। यहां प्रायः पचास तरह के सांप पाये जाते हैं। उनमें गोखुरा सबसे अधिक भयंकर होता है। गोखुरा के ही पास मणि रहती है। सभी गोखुरा सांपों के पास मणि नहीं होती। केवल बहुत पुराने गोखुरा के पास ही मणि होती है। वह अपने मस्तक में अपनी मणि नहीं रखता, अपने मुख के बीच में रखता है और यत्नपूर्वक उसको रक्षा करता है। प्राण जाने पर भी वह अपनी मणि का परित्याग करना नहीं

चाहता। जब गम्भीर रात्रि में सारा जन-समुदाय सो जाता है, तो वह साफ-सुथरे तृण के ऊपर अपनी मणि रख कर उसके प्रकाश मे बड़े आनन्द से इधर-उधर घूमता है। तनिक शब्द हुआ नहीं कि, वह झट अपनी मणि उठा कर अपने मुंह में रख लेता है। सबसे विशेष बात यह है कि, वह प्रतिदिन रात में एक ही स्थान में अपनी मणि के साथ खेलता है। उसकी मणि को प्राप्त करना बहुत कठिन तो है, किन्तु असंभव नहीं है। दो-चार दिनों के बाद ही मैं तुम्हें सांप की मणि दिखा सकूंगा। आज ही मैं अपने कुछ आदमियों से कहे देता हूं। वे उसकी तलाश में रहेंगे और पता चलने पर तुम्हें अपने साथ ले जा कर दिखायेंगे।"

धीरे-धीरे तीन दिन बीत गये। चौथे दिन जब कुछ रात हो गई थी, निरंजन बाबू के लड़के निखिलरंजन ने मेरे पास आकर कहा, "मणि का पता लग गया है। जाकर देख आइए।" मैं उत्सुकता से बाहर गया। मैंने देखा, निरंजन बाबू का एक आदमी खड़ा है। उसने कहा, "यहां से थोड़ी दूर पर गोखुरा अपनी मणि के साथ खेल रहा है। इस समय चलने से आप उसे देख सकेंगे।" मैं शीघ्र उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। कुछ दूर जाने पर, मैंने सीधा मार्ग छोड़ कर जंगल में प्रवेश किया। जंगल में थोड़ी ही दूर आगे जाने पर, सहसा वह आदमी खड़ा हो गया। उसने उंगली उठा कर संकेत से कहा, "वह देखिये!"

मैंने जो कुछ देखा, अवाक्-सा हो गया। प्रायः बीस-पच्चीस हाथ की दूरी पर, एक वृक्ष के नीचे एक बहुत बड़ा गोखुरा अपना फन फैला कर बड़ी मस्ती के साथ झूम रहा था। उसके पास ही एक अत्यन्त स्निग्ध प्रकाश फूट रहा था। पहले मन में यह विचार उठा, वह जुगनू का प्रकाश होगा, क्योंकि उस समय बहुत से जुगनू इधर-उधर उड़ रहे थे, किन्तु जब मैंने ध्यान से देखा, तो मुझे मालूम हुआ, वह जुगनू नहीं, कोई और वस्तु है। जुगनू की ज्योति एक बार चमक उठती है, फिर विलीन हो जाती है, किन्तु वह ज्योति, जो मेरे सामने दिखाई दे रही थी, बराबर दीप्तिमान थी। उसका प्रकाश जुगनू के प्रकाश से भिन्न था।

मणिधर सांप

मैं प्राय: दो घंटे तक उस ज्योति की ओर देखता रहा। ठीक सांप के समान ही उस पर मुग्ध हो गया। उसके बाद मन-ही-मन सोचने लगा, मैं इस मणि को किस प्रकार ले सकता हूं? मैंने उस आदमी से कहा, "बड़ी भूल हो गई। यदि आते समय बन्दूक लिये आया होता, तो सांप को मार कर सरलता से मणि ले लेता।" उसने उत्तर दिया, "बन्दूक की कोई आवश्यकता नहीं। आप चिन्ता न करें। आज लौट चलें। कल आपको मणि मिल जायगी।" मैं क्या करता? इच्छा न रहने पर भी घर लौट गया, किन्तु मस्तिष्क में यह विचार चक्कर लगाता ही रहा, 'हाय, हाथ में आई हुई मणि निकल गई!'

दूसरे दिन संध्या नहीं हुई थी। मैं उस आदमी के साथ फिर उस वृक्ष के नीचे जा पहुंचा। उस आदमी ने मुझे अपने साथ ही उस वृक्ष पर चढ़ने का आदेश दिया। यद्यपि मुझे वृक्ष पर चढ़ने का अभ्यास नहीं था, किन्तु मणि का लोभ! मैं किसी तरह वृक्ष पर चढ़ कर एक डाल पर जा बैठा। वह एक दूसरी डाल पर बैठा। इसी तरह कई घंटे बीत गये। धीरे-धीरे रात गम्भीर हो गई। मैं चुपचाप अपनी सांस खींच कर डाल पर बैठा था। सहसा मुझे वृक्ष के नीचे 'खड़-खड़' शब्द सुनाई पड़ा। कुछ ही क्षण बीत पाये थे कि, वही आलोक अन्धकार को भेद कर फूट पड़ा। सांप पहले दिन की ही भांति मणि हरित तृणों पर रख कर, उसके प्रकाश में आनन्द-मग्न मैं खेलने लगा। मैं उस आलोक को देख कर अपने आपको भूल गया। मुझे यह भी ज्ञात न रहा कि, मैं कहां और किस लिए बैठा हूं! मैंने उस आदमी से यह पूछना चाहा कि, मैं अब इस मणि को किस प्रकार ले सकता हूं, किन्तु बोलने से पहले ही उसने संकेत से मुझे चुप रहने का आदेश दिया। मुझे अपनी भूल मालूम हुई। इसके बाद उस आदमी ने जो काम किया, उससे उसकी बुद्धि की जितनी ही अधिक प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। घर से आते समय वह अपने साथ एक बड़ा कपड़ा लेता आया था। उसने उस कपड़े को मणि के ऊपर डाल दिया। सहसा प्रकाश बुझ गया। सांप इधर-उधर दौड़ने लगा। उसका दौड़ना पत्तों की खड़-

खड़ाहट से साफ-साफ मालूम हो रहा था। वह अपनी मणि न पाकर कितना विकल हो रहा था, इसका अनुमान क्या कोई लगा सकता है ?

थोड़ी देर बाद खड़खड़ाहट का शब्द रुक गया। मैं वृक्ष से नीचे उतरने की बात सोचने लगा, किन्तु उस आदमी ने मुझे रोक कर कहा, "खबरदार, भूलकर भी नीचे न उतरना। कौन जाने, सांप वहीं छिप कर बैठा हो।" इस लिए शेष रात डाल पर ही बिताओ।" मुझे भी उसकी बात युक्ति-युक्त मालूम हुई। मैं रात भर उसी वृक्ष पर बैठा रहा। जब सवेरा हुआ, तो नीचे उतरा। मैंने बड़ी उत्सुकता से आगे बढ़ कर हाथ में मणि उठा ली। उसे पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता प्राप्त हुई थी, क्या कोई उसका अनुभव कर सकता है ?

: 15 :

जो वनमानुष कहे जाते हैं

वनमानुष दक्षिणी अफ्रीका के जंगलों में रहता है। तुम में से ऐसा कोई भी न होगा, जिसने कभी वनमानुष देखा हो। तुम्हीं क्यों, संसार में बहुत कम ऐसे लोग होंगे, जिन्होंने वनमानुष देखा होगा। बहुत प्रयत्नों और अधिक रुपया खर्च करने के बाद मात्र दो वनमानुष पकड़ कर यूरोप और अमेरिका ले जाये जा सके हैं।

अफ्रीका के आदिम निवासियों का कहना है, वनमानुष एक प्रकार का दैत्य है। बड़े-बड़े निर्भीक और साहसी मनुष्य भी, जो बड़े-बड़े सिंहों, गैंडों और बाघों के सामने जाते हुए नहीं हिचकिचाते, वनमानुष के केवल नाम को सुन कर ही कांप उठते हैं। वास्तव में वनमानुष ऐसा ही भयंकर होता है। सिंह और गैंडे के समान दुर्दान्त जानवर भी वनमानुष को दूर ही से नमस्कार करते हैं।

किन्तु अनेक प्रकार की विपत्तियों के होते हुए भी अफ्रीका के प्राचीन निवासी वनमानुष के शिकार से पीछे नहीं हटते। वनमानुष का मांस उन्हें अत्यन्त स्वादिष्ट मालूम होता है। इसके अतिरिक्त जो किसी वनमानुष का शिकार करता है, वह वीर समझ कर सम्मानित भी किया जाता है। अफ्रीका के आदिम निवासियों में ऐसा कोई मनुष्य दिखाई न पड़ेगा, जिसके हृदय में वनमानुष-शिकार की लालसा न हो। सभी वनमानुष को पकड़ कर अपने को वीर प्रमाणित करना चाहते हैं। बहुत से ऐसे हैं, जो वीर बनने की लालसा में अंग-हीन तक बन जाते हैं। वनमानुष अपने तेज नखों से उनके शरीर को क्षत-विक्षत

कर डालता है। इतना ही नहीं, न जाने कितने इसी लालसा में मौत के मुख में भी जा चुके हैं। यह सब होने पर भी अफ्रीका के आदिम निवासी वनमानुष के शिकार में अपनी उत्सुकता प्रकट करते हैं। कैसा है उनका असीम साहस !

वनमानुष संसार का एक बड़ा ही विचित्र जानवर है। पशुओं में उसकी जोड़ का कोई और दूसरा जानवर नहीं है। उसका विशाल शरीर, उसकी लम्बी-लम्बी भुजाएं देखते ही बनती हैं। वनमानुष के शारीरिक गठन को देख कर, प्रकृति के कौशल पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता।

वनमानुष अधिकतर वृक्षों पर ही रहता है। वृक्ष ही उसके घर हैं। वह वृक्षों पर जिस तेज़ी के साथ चढ़ता है, उसे देख कर जंगली मनुष्यों को भी आश्चर्य में आ जाना पड़ता है। वह भूमि पर अधिक नहीं चल सकता। चलता तो है, किन्तु चलते समय उसे अपने लम्बे-लम्बे हाथों और उंगलियों की टेक लगानी पड़ती है।

वनमानुष छलांग खूब लगाता है। एक बार एक अंगरेज़ ने कैमरून के जंगल में एक वनमानुष को चालीस फुट की लम्बी छलांग भरते हुए देखा था। उस अंगरेज को उस समय अधिक आश्चर्य हुआ, जब उसने सात फुट की ऊंचाई का एक वनमानुष देखा। वह देखते-ही-देखते एक ऊंचे वृक्ष की चोटी पर उछल कर इस तरह चढ़ गया कि, लोगों को दांतों तले उंगली दबानी पड़ी। वनमानुष वृक्षों पर बड़े विचित्र ढंग से चढ़ता, उछलता, और कूदता है। वह कभी नीचे आता, तो कभी बहुत ऊपर चला जाता है। कदाचित्, इस क्रिया में वह आनन्द का अनुभव करता है। वह जब मैदानी में लम्बी दौड़ लगाने लगता है, तो बीच-बीच में वृक्षों की शाखाएं पकड़ कर थोड़ी देर के लिए विश्राम कर लेता है। उसकी फुर्ती और उसकी शक्ति उस समय अधिक देखी जाती है, जब कोई शत्रु उस पर आक्रमण करता है। बड़े-बड़े वनमानुषों का तो कहना ही क्या, छोटे-छोटे बच्चे भी उस समय स्फूर्ति की प्रतिमा बन जाते हैं। उस समय उनका कौशल, उनकी स्फूर्ति, और उनकी शक्ति देखकर बड़े-बड़े शिकारियों को भी आश्चर्य

में आ जाना पड़ता है।

पहले कुछ लोग यह कहा करते थे, वनमानुष अपने लिये घर नहीं बनाता। वह किसी दूसरे जीव के बने-बनाये घर पर अपना अधिकार कर लेता है और सकुटुम्ब वहीं जा बसता है, किन्तु लन्दन के चिड़ियाखाने में रहने वाले एक वनमानुष ने लोगों के इस विश्वास को मिथ्या प्रमाणित कर दिया। एक दिन जब भयंकर बर्फ पड़ रही थी, तो वह वनमानुष अपने पिंजड़े से निकल भागा। उस समय सर्दी की अधिकता थी। वह सर्दी से बचने के लिए एक सनोवर के वृक्ष पर जा बैठा और छोटी-छोटी टहनियों का घर बनाकर उसमें विश्राम करने लगा। सवेरे जब उसकी खोज की गई, तो लोगों को इस रहस्य का पता चला। सुनते हैं, वनमानुष का वह घर आज भी लन्दन के चिड़ियाखाने में सुरक्षित रूप में रक्खा हुआ है।

वनमानुष के शिकार में बड़े-बड़े शिकारियों के भी छक्के छूट जाते हैं। आज तक केवल दो ही मनुष्यों ने वनमानुष के शिकार में सुख्याति प्राप्ति की है। उनमें एक का नाम डूशेल और दूसरे का नाम 'वारब्रिज' है। डूशेल ने 1861 ई० में एक वनमानुष का शिकार किया था। उसने उस शिकार के सम्बन्ध में एक स्थान पर लिखा है—"मै धीरे-धीरे वन के सघन भाग में प्रवेश करने लगा। दोपहर का समय था, फिर भी चारों ओर अन्धकार-सा छिटका हुआ था। थोड़ी दूर पर टूटे हुए डाल-पत्तों के ढेर देखकर मुझे वनमानुष के निवास-स्थान का अनुमान हुआ। मैं चुपचाप उसी ओर बढ़ने लगा। सहसा मेरे कानों में एक ऐसी हुंकार पड़ी, जिसे सुनकर प्राण तक कांप उठे। मेरे प्राण ही नहीं, उसे सुन कर यदि वन का कठोर हृदय भी कांप उठा हो तो आश्चर्य क्या ?

"अभी मैं खड़ा होकर उस पर विचार कर ही रहा था कि, एक विपुलकाय वनमानुष वृक्ष की चोटी से मेरे सामने कूद पड़ा। मुझमें और उसमें केवल तीन हाथ का अन्तर रहा होगा। उस भयंकर प्राणी को देख कर उस समय मेरी जो दशा हुई, उसे मैं जीवन-पर्यन्त नहीं भूल सकता। चार हाथ लम्बा

विशाल शरीर, प्रशस्त वक्षःस्थल सुदृढ़ भुजाएं, अग्नि-सी आंखें, ऐसा ज्ञात होता था मानो यम का प्रतिरूप हो। वह मुझे देखकर तनिक भी भयभीत नहीं हुआ। अपने स्थान पर खड़ा होकर, अपनी ही मुष्टिका से अपनी छाती पीटने लगा। वह अपनी छाती पीटता जाता था और साथ ही गर्जता भी जाता था। उसकी उस गर्जना से, सारा वन निनादित-सा हो उठा। अभी तक मैं उसके आक्रमण की प्रतीक्षा में खड़ा था। ज्यों ही वह मेरी ओर बढ़ा, मैंने गोली से उसका स्वागत किया। मेरी गोली उसके मस्तक में लगी। वह बड़े ज़ोर से आर्तनाद करके भूमि पर गिर पड़ा। उसका आर्तनाद सुन कर मुझे मालूम हुआ, मानो कोई मनुष्य मेरी गोली से आहत होकर पीड़ा से चिल्ला रहा है। वह थोड़ी देर तक क्रन्दन करने के बाद चुप हो गया, सदा के लिए चुप हो गया।"

'ब्रारब्रिज' साहब ने भी इसी प्रकार की एक रोचक और विस्मय से भरी कथा लिखी है।

: 16 :

वृक्ष, जो मनुष्य का शिकार करता है

तुमने बहुत से पेड़-पौधों का हाल सुना होगा, किन्तु कदाचित् तुमने ऐसे वृक्ष का हाल न सुना होगा, जो मनुष्यों का शिकार करता हो। हम यहां एक ऐसे ही वृक्ष का हाल सुना रहे हैं। अफ्रीका महाद्वीप का नाम सुना ही होगा! इसी महाद्वीप में मेडागास्कर नाम का एक टापू है। वह अद्भुत वृक्ष उसी टापू में पाया जाता है। कुछ दिनों पूर्व न तो उस वृक्ष का पता लगा था, न कोई उसके सम्बन्ध में कुछ जानता ही था। जर्मनी के एक डॉक्टर कार्ल लीचे ने अभी कुछ ही दिन हुए, उस अद्भुत वृक्ष का पता लगाया है।

डॉक्टर साहब ने उस वृक्ष के सम्बन्ध में बड़ी ही अद्भुत बातें लिखी हैं। उनका कहना है, "उस वृक्ष का नाम क्रियायदादार्जीना है। वह प्रायः दस फुट से अधिक ऊंचा होता है। वह बड़ा शक्तिशाली होता है। वह बली से बली मनुष्य को अपनी झंझरी में फंसा कर उसे नष्ट कर डालता है। 'मकोडस' नाम के जंगली मनुष्य बड़ी श्रद्धा से उस वृक्ष की पूजा करते हैं। वे पूजा के समय, वृक्ष की प्रसन्नता के लिए, उसे कुमारी बालिकाओं की बलि देते हैं। उनका विश्वास है, वृक्ष उस बलि को पाकर सन्तुष्ट होता है, और मकोडस जाति के मनुष्यों पर अपनी असीम कृपा रखता है।"

डॉक्टर लीचे ने बलिदान के भयंकर दृश्य को अपनी आंखों से देखा था। उन्होंने उस वृक्ष और उसे दिए जाने वाले बलिदान के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है, उसी का सारांश हम यहां सुनाने जा रहे हैं। उन्होने लिखा है—"वह वृक्ष देखने में बड़ा अद्भुत होता है। उसका तना दस फुट ऊंचा होता है। तने की

शिकारी वृक्ष को बालिका की बलि देते हुए लोग

शकल ठीक पीपे के समान होती है। उसकी छाल पर अनेक प्रकार की चित्रकारी दिखाई देती है। वह देखने में ऐसा लगता है, जैसे कोई बहुत बड़ा अनन्नास हो।

तने के ऊपर एक बहुत बड़ा थाल रहता है। तने की चोटी से भूमि तक आठ पत्ते लटकते रहते हैं। पत्तों की लम्बाई दस-बारह फुट के लगभग होती हैं। जहां से पत्ते निकलते है, वहां एक फुट चौड़े होते हैं, किन्तु आगे बढ़कर दो फुट चौड़े हो जाते हैं। अन्त में सूंड़ की तरह घूम कर नोक के समान तेज़ हो जाते हैं। उनके ऊपर बहुत से बड़े-बड़े जहरीले कांटे निकले रहते हैं। कांटों की मोटाई पन्द्रह इंच से कम नहीं होती। कांटों की नोकें जमीन को छूती रहती हैं। तने पर जो थाल बना रहता है, उसके निम्न भाग से आधे दर्जन सूत निकले रहते हैं। वे देखने में बहुत कमजोर मालूम होते हैं। उनके सिर का भाग ऊपर की ओर उठा रहता है। तने की चोटी पर जो थाल है, उससे एक तरह का गाढ़ा और स्वादिष्ट रस-सा निकलता रहता है। यही रस उस वृक्ष की पैदावार है। वह कदाचित् पक्षियों को फंसाने के लिए ही उसमें पैदा होता है। वह बहुत नशीला होता है। उसे थोड़ा चखने पर ही मूर्च्छा आ जाती है।

जब किसी लड़की का बलिदान किया जाने लगता है, तो लोग उसे बल-पूर्वक वृक्ष पर चढ़ाते हैं। इतना ही नहीं, उसे वृक्ष का रस भी पीने के लिए विवश करते हैं। यदि वृक्ष प्रसन्न-चित्त रहता है, तो उस लड़की को नीचे उतरने देता है। अप्रसन्नता पर तो उस बेचारी लड़की का जीवन संकटों और दुर्दशाओं का शिकार बन जाता है। पहले मुझे यह बात नहीं मालूम थी कि, वृक्ष किस तरह उस लड़की को नीचे उतरने से रोकता है, किन्तु एक दिन यह बात भी मुझे भली भांति मालूम हो गयी। एक दिन सहसा मुझे यह समाचार मिला कि, आज रात एक लड़की की बलि दी जायगी। मैंने उस जंगली जाति के प्रमुख सरदार से भेंट की और भेंट-स्वरूप उसकी सेवा भी की। उसने मुझे अपने मनाये जाने वाले त्योहार में सम्मिलित होने की आज्ञा दे दी। मैं उन

लोगों के साथ रात में जंगल में गया। जब लोग उस पेड़ के पास पहुंचे, तो सबसे पहले उससे कुछ दूर पर उसके चारों ओर आग जला दी गयी। चारों ओर प्रकाश छिटक पड़ा। फिर सब लोग खा-पीकर रंग-रेलियां मनाने लगे। शराब अधिक परिमाण में काम में लाई गई। लोग शराब पी-पीकर मतवाले बन गये। केवल उस लड़की को, जिसकी बलि दी जाने वाली थी, शराब नहीं दी गयी। लड़की अत्यन्त भयभीत हो रही थी। उसके मुख से एक शब्द तक नहीं निकल रहा था। वह भयभीत आंखों से चारों ओर देख रही थी।

सहसा लोग चुप हो गये, भयभीत मृग की भांति इधर-उधर छिटक गये। केवल आग के चटखने के शब्द कानों में पड़ रहे थे। मैं यह समझने से बाकी न रहा कि, जिस लड़की को मैंने अत्यन्त भयभीत देखा है, उसी की बलि दी जायगी! मैंने उत्सुकता से पुनः उसकी ओर देखा। वह बिलकुल डरी हुई-सी दिखाई दे रही थी। कुछ देर पहले जो लोग शराब पीकर बेहोश हो गये थे, उन्हें अब कुछ-कुछ होश-सा आने लगा था। वे उछलते-कूदते हुए पुनः उस भयभीत लड़की के पास पहुंचे। उसे चारों ओर से घेर लिया गया। वे चिल्ला-चिल्ला कर उसे वृक्ष पर चढ़ने के लिए आदेश देने लगे, किन्तु वह भयभीत होकर पीछे हटती जा रही थी, और साथ ही दया के लिए प्रार्थना भी करती जा रही थी। उन पर उसकी प्रार्थना का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। वे और भी नृशंसता से उसे डराने लगे, वृक्ष पर चढ़ने के लिए जोर देने लगे। जब लड़की किसी तरह वृक्ष की ओर न बढ़ी, तो वे भालों के द्वारा उसे वृक्ष पर चढ़ने के लिए विवश करने लगे।

बेचारी लड़की क्या करती? उसे विवश होकर वृक्ष के पास जाना ही पड़ा। वह थोड़ी देर तक वृक्ष के पास खड़ी रही, फिर बड़े जोर से वृक्ष की ओर उछली। वह अपने हाथों के सहारे वृक्ष के ऊपर चढ़ गयी। उसने वृक्ष की चोटी पर पहुँच कर उसका रस पी लिया। मैं सोचता था, कदाचित् लड़की नीचे उतर पड़ेगी, किन्तु एक मिनट के बाद ही वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी।

मुझे यह देख कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि, जो वृक्ष एक मिनट पहले चुपचाप खड़ा था, उसने लड़की को पकड़ने की चेष्टा करनी आरम्भ की। उसके जो सूत कमजोर दिखाई दे रहे थे, वे गुड़ी मार कर लड़की के कन्धे और सिर से ऐसे चिपट गये कि, उसके छुटकारे का कोई मार्ग ही न रहा। हरी-हरी पत्तियां जो पहले कड़ी दिखाई दे रही थीं, ऐंठने लगीं। टहनियों ने ऐंठ कर सांपों की भांति गुड़ी मार ली। जिस समय यह सब हो रहा था, मेरी आंखों के सामने एक ऐसा भयानक दृश्य आया कि, मैं उसे जीवन-पर्यन्त नहीं भूल सकूगा। वृक्ष के वे पत्ते जो अभी पृथ्वी को छू रहे थे, धीरे-धीरे ऊपर उठने लगे। उनके तेज, लम्बे और भयानक कांटे भीतर छिप गये थे। धीरे-धीरे उनकी तेज नोक लड़की के शरीर में जाकर घुस गयी। लड़की उन्हीं कांटों के शिकंजे में पीस डाली गयी। जिस समय वे एक-दूसरे से मिले, तने से गुलाबी रंग का पानी बहने लगा। यह देख कर लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे फिर खाने-पीने और आनन्द मनाने लगे।

: 17 :

पौधे, जो मांस खाते हैं

यह तो सभी जानते हैं कि, हिंसक जानवर और बहुत से सभ्य मनुष्य मांस खाते हैं, किन्तु कदाचित् कोई इस बात पर विश्वास नहीं करेगा कि, बहुत से पेड़-पौधे भी मांस-प्रिय होते हैं। कौन कह सकता है, पेड़-पौधे जैसे निरीह और निचेष्ट प्राणी भी भेड़, बकरी, और मनुष्यों को उसी प्रकार अपनी ओर खींच कर अपना शिकार बना लेते हैं, जिस प्रकार वन के हिंसक जीव। लड़कपन में यह बात सुनी थी कि, मैडागास्कर टापू में एक वृक्ष ने एक संन्यासी को अपना शिकार बना डाला था। उस समय मुझे इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ था, किन्तु आज जब मैं स्वयं मांस खाने वाले पौधों की चर्चा करने जा रहा हूं, तो मुझे यही कहना पड़ रहा है कि, प्रकृति की गोद में सब कुछ संभव हो सकता है। भेड़, बकरी और मनुष्य की बात तो मैं नहीं कह सकता, किन्तु छोटे-छोटे कीड़ों का मांस खाने वाले पेड़-पौधे हमारे देश में भी बहुत से मौजूद हैं। उन्हीं पौधों का परिचय हम यहां करायेंगे।

झांझि—वर्षा ऋतु में जब पानी बरसता है, तो हमारे देश की नीची भूमि में यह अधिक संख्या में उगता है। उसके हल्दी के रंग के छोटे-छोटे सुन्दर फूल जल से उठे हुए ऊपर के डंठल में गुंथे रहते हैं। यदि तुम जल से निकाल कर हाथ में लेकर देखो, तो तुम्हें नीचे सोंड़ के रूप में कुछ चीजें दिखाई देंगी, पर वे उसकी सोंड नहीं, उसके पत्ते हैं। आश्चर्य तो यह है कि, उसमें सोंड़ होती ही नहीं। पत्ते जिस डंठल से निकले हुए रहते हैं, उसमें मोतियों के सदृश बहुत-सी छोटी-छोटी गोलियां दिखाई देती हैं। वह उन्हीं गोलियों के द्वारा छोटे-छोटे

कीड़ों को पकड़ कर, उन्हें अपना शिकार बनाता है। उन गोलियों में सन्दूक के समान घिरा हुआ एक छोटा घर होता है। घर के द्वार पर एक तरह की किवाड़ लगी रहती है। किवाड़ ऐसी चतुराई से लगी रहती है कि, बाहर से भीतर की ओर बड़ी सरलता के साथ ठेली जा सकती है, किन्तु भीतर से लाख चेष्टा करने

ब्लाडि

पर भी नहीं खुलती। जल के छोटे-छोटे जीव यह समझते हैं कि, गोलियों के भीतर खाने की चीजें मिलेंगी। वे लालच से भीतर जा पहुंचते है और फिर लाख चेष्टा करने पर भी बाहर नहीं निकल पाते। जिस प्रकार भोजन की चीजों को देख कर हमारे मुंह से लार टपकने लगती है, उसी प्रकार जब छोटे-छोटे कीड़े

गोलियों में जा पहुंचते हैं, तो वृक्ष के शरीर से एक प्रकार का पाचक रस निकलने लगता है। उस पाचक रस की शक्ति से वह उन कीड़ों को मार कर खा जाता है।

ड्रेसर—यह भी एक प्रकार का पौधा है। वीरभूमि, रंगपुर और दिनाजपुर के आस-पास अधिक पाया जाता है। एक प्रकार की सबुज रंग की घास होती है, वह उसी के भीतर पैदा होता है। साधारण मनुष्य उसे 'पान पीक' के नाम से पुकारते हैं। इसका कारण यह है कि जब सबुज रंग की घास के भीतर लाल रंग का पौधा दिखाई देता है, तो ऐसा मालूम होता है, मानो किसी ने पान खाकर पीक थूक दी हो।
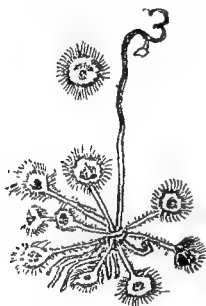
ड्रेसर

उसके गोल-गोल पत्ते पृथ्वी से ऊपर उठे रहते हैं। पत्तों के किनारे और पृष्ठों पर असंख्य सुइयां-सी रहती हैं। किसी-किसी पत्ते में उनकी संख्या दो सौ से भी अधिक होती है। प्रत्येक सुई के आगे एक गोल-सा चिह्न रहता है। चिह्न एक प्रकार के पदार्थ द्वारा चारों ओर से घिरा रहता है। ऐसा मालूम होता है, मानो सूर्य के प्रकाश में शिशिर ऋतु की ओस की कोई उज्ज्वल बूंद हो।

छोटे-छोटे कीड़े जब उस सफेद बिन्दु और पत्ते के लाल रंग को देखते हैं, तो वे मुग्ध हो जाते हैं। सफेद बिन्दी को खाद्य-सामग्री समझ कर पत्ते के ऊपर जा बैठते हैं। कीड़ों के बैठते ही पत्ते की सुइयां चारों ओर से मुड़कर उन्हें अपने शिकंजे में फांस लेती है। साथ ही सुइयों से एक प्रकार का पाचक रस निकलने लगता है। उसी रस के द्वारा यह पौधा कीड़ों को मार कर उन्हें बड़े आनन्द से

खाता है। जब वह कीड़ों को खा चुकता है, तो पत्ते की सुइयां फिर पहले के समान सीधी हो जाती हैं।

वाटर यार्ट—यह हमारे देश में अधिक नहीं होता। ड्रेसर के समान यह भी अधिक छोटा होता है। इसके पत्ते एक इंच तक लम्बे होते हैं और भूमि पर फैले रहते है। पत्तों का ऊपरी भाग मक्खन के समान, एक प्रकार के 'चिपचिपे' पदार्थ से घिरा रहता है। जब कोई कीड़ा इसके पत्तों पर बैठता है, तो वह पत्तों में लगे हुए मक्खन से चिपक जाता है। पत्ते के किनारे ऊपर की ओर कुछ टेढ़े रहते हैं। जब कोई कीड़ा मक्खन में चिपकता है, तो पत्ता टेढ़ा होकर कीड़े को अपने चंगुल में फंसा लेता है। साथ ही, ग्रन्थियों से एक प्रकार का रस निकलने लगता है। वह उसी रस से कीड़े को मार कर उसे बड़े आनन्द से खाता है।
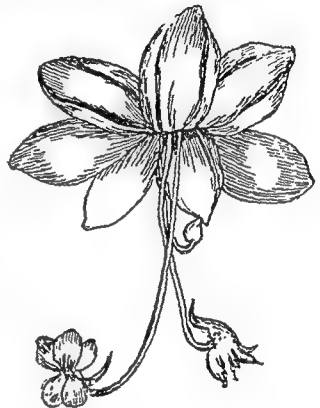
वाटर यार्ट

बेनास फ्लाई ट्राप—यह भी हमारे देश में नहीं होता। यह अपने पत्तों के द्वारा कीड़ों को पकड़ता है। इसके पत्ते भूमि पर फैले रहते हैं। पत्ते दो भाग में बंटे रहते हैं। एक भाग बोंड़ी का और दूसरा भाग फल का होता है। जो पत्ता बोंड़ी में लगता है, वह चौड़ा होने पर भी फल के पत्ते ही के समान दिखाई देता है। फल के पत्ते में कब्जे के समान दो किवाड़ें रहती हैं। उन्हें वह अपनी इच्छानुसार खोल और बन्द कर सकता है। फल के पत्ते के किनारे पर

वे घड़े के मुख में चले जाते हैं। एक बार जब घड़े के मुख में चले गए, तो फिर उनके छुटकारे की आशा कहां? वे उसी में छटपटा कर उसके शिकार

नेपेन्थिस

बन जाते हैं।

नेपेन्थिस की तरह एक और भी पौधा होता है, उसका नाम सेरासेनिया है। वह अमेरिका के पूर्वी भाग में प्रचुर मात्रा से मिलता है। वह भी नेपेन्थिस ही की भांति बड़े कौशल से कीट-पतंगों को खाया करता है।

: 18 :

पहाड़, जो चन्द्र में हैं

हमारा चन्द्रलोक, जो देखने में बड़ा सुन्दर लगता है, बड़ा अनोखा है। चन्द्रलोक में न जल है, न वायु है। न बादल होते हैं, न वहां वर्षा होती है। पेड़-पौधे और जीव-जन्तु भी नहीं पाए जाते। फिर पाया क्या जाता है ? केवल पहाड़ ! हमारे देश की भांति वे पहाड़ जंगलों और बरफों से ढके नहीं रहते है। उनमें केवल पत्थर ही पत्थर हैं।

तुमने भूगोल में ज्वालामुखी पहाड़ों का नाम पढ़ा होगा। यही क्यों, तुम्हें विस्यूवियस, एटना और कोकातोया आदि ज्वालामुखी पहाड़ों के नाम भी याद होंगे। तुम यह भी जानते होगे कि, ज्वालामुखी पहाड़ अपने मुख से पत्थर, आग, लावा और राख इत्यादि चीजों की वर्षा करके अपने समीप के देशों को नष्टभ्रष्ट कर डालते हैं। तुम विस्यूवियस और पाम्पियाई का हाल पढ़ ही चुके हो। इसी प्रकार चांद के पहाड़ों में भी बहुत-से ज्वालामुखी पहाड़ हैं, किन्तु उनके भीतर से इस समय अग्नि, राख और लावा नहीं निकलती। इसका कारण यह है कि, वे इस समय ठंडे हो गये हैं। प्राचीन काल में उनके मुख से जो अग्नि, लावा, राख और पत्थर निकले थे, वे ही उन ज्वालामुखी पहाड़ों के चारों ओर बड़े-बड़े पहाड़ बन गये हैं।

वैज्ञानिक चांद के संबंध में अनेक प्रकार की जानकारी रखते हैं। इतनी जानकारी रखते हैं कि उन्होंने चन्द्रलोक का मानचित्र तक तैयार कर लिया है। कहां कौन पहाड़ है, कहां कौन नदी है, उस मानचित्र में सभी बातें ठीक-ठीक

स्थान पर दिखाई गई हैं। इतना ही नहीं, वैज्ञानिकों ने सभी पहाड़ों के नामकरण भी किये हैं।

चांद के पहाड़ हमारी पृथ्वी के पहाड़ों से अधिक ऊंचे हैं। हिमालय, आंडेज आदि पहाड़ों को छोड़कर पृथ्वी का कोई पहाड़ ऊंचाई में चांद के पहाड़ों की बराबरी नहीं कर सकता। चांद के ज्वालामुखी पहाड़ों में बड़ी-बड़ी गुफाएं हैं। वैज्ञानिक चांद के एक ज्वालामुखी पहाड़ का नाम 'कोपार निकास' बताते हैं।

चांद के पहाड़

उसमें एक भयानक गुफा है, जिसकी चौड़ाई 68 मील के लगभग है। गुफा के चारों ओर जो दीवार है, उसकी ऊंचाई प्रायः दो मील से भी अधिक है। इसी

तरह और वहुत-सी वड़ी-वड़ी गुफाएं चांद के पहाड़ों में हैं। आश्चर्य की वात तो यह है कि, चांद हमारी पृथ्वी से वहुत छोटा है। इतना छोटा है कि, पचास चांद एकत्र होने पर भी हमारी पृथ्वी की समानता नहीं कर सकेंगे।

चांद के पहाड़ क्यों इतने ऊंचे हैं और चांद के ज्वालामुखी पहाड़ों में क्यों इतनी वड़ी-वड़ी गुफाएं है—इस पर वैज्ञानिकों ने वड़ी अच्छाई के साथ विचार किया है। उनका कहना है, पृथ्वी सभी वस्तुओं को दिन-रात अपनी ओर खींचती है। चांद मे भी खींचने की ताकत है, किन्तु पृथ्वी से वहुत कम। वैज्ञानिक इसके सम्वन्ध में कई उदाहरण देते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है, पृथ्वी पर जिस चीज का वजन 6 मन होता है, चन्द्रलोक में उसी का वजन एक मन होता है। वैज्ञानिक इसके सम्वन्ध में और भी कई वातें वताते हैं।

पहाड़ों की ऊंचाई से भी अधिक आश्चर्य तुम्हें इस वात से होगा कि, चन्द्रमा में वहुत-से ज्वालामुखी पहाड़ हैं। तुम्हारा यह सोचना स्वाभाविक है कि, चन्द्रमा में इतने ज्वालामुखी पहाड़ कहां से आए ? इसके लिए तुम्हें अपने ध्यान को करोड़ वर्ष पहले ले जाना पड़ेगा। मैं तुम्हारे ध्यान को जिस युग में ले जा रहा हूं, वह एक दूसरा ही युग था। उस समय पृथ्वी आज के समान नहीं थी। उस समय वह विल्कुल आग के एक गोले के सदृश थी। वह आज की पृथ्वी से अधिक शक्ति के साथ सूर्य के चारों ओर चाक के सदृश घूमा करती थी। उस समय किसी तरह उसका कोई अंश छिटककर वाहर हो गया। वह छिटका हुआ अंश पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा। वही छिटका हुआ अंश हमारा चन्द्रमा है।

कड़ाही के गर्म दूध को ठंडा करने में अधिक समय लगता है, किन्तु यदि तुम उसी दूध को अलग-अलग कई भागों में वांटकर रख दो, तो वह शीघ्र ठंडा हो जाएगा। चन्द्रमा के सम्वन्ध में भी यही वात कही जा सकती है। चांद उत्तप्त पृथ्वी से अलग होकर वहुत शीघ्र ठंडा हो गया, किन्तु इसका यह मतलव नहीं कि, चांद दो ही चार दिनों में ठंडा हो गया। ठंडा होने के पहले चन्द्रमा की गरम गैस तरल वन गई थी। इसके वाद वह जमकर कठोर हो गई, किंतु

सब एक साथ ही जमकर कठोर नहीं हुई। ऊपरी भाग जब जमकर कठोर हुआ, उस समय भी चन्द्रमा के भीतरी हिस्से में तरलता मौजूद थी। यही क्यों, बहुत-सा भाग उस समय भी अत्यंत गरम और धुंधला था। वही धुंधला और गरम भाग चांद के ऊपरी हिस्से को भेदकर कभी-कभी प्रचंड वेग से भड़क उठता था। यही कारण है कि, चांद के पहाड़ों में इतने ज्वालामुखी पहाड़ों की सृष्टि हुई।

चांद का आकार बहुत छोटा है। इसलिए पृथ्वी की अपेक्षा उसके भीतरी भाग में बहुत शीघ्र परिवर्तन हुए। बहुत-से लोगों का कहना है, चांद में ज्वालामुखी पहाड़ों की अधिकता का यह भी एक कारण है।

इसके बाद चांद में अब और भी अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। उसके भीतर का गरम और तरल भाग धीरे-धीरे ठंडा होकर इस समय जमकर कठोर हो गया है। सभी ज्वालामुखी पर्वत भी ठंडे पड़ गये हैं। केवल रह गये हैं, कंकाल के सदृश शून्य पत्थर! यही है हमारे आकाश का स्वर्ण चांद, जिसको छवि हम तुम बड़े आनन्द से देखा करते हैं।

: 19 :

छछूंदरें, जो दुर्गन्ध पैदा करती हैं

ऐसा कोई भी आदमी नहीं होगा, जिसने छछूंदरें न देखी हों। छछूंदरें नुकीले मुंह की, चूहों की आकार की होती हैं। घरों में रहती हैं, बाहर भी रहती हैं। देखने में बड़ी बेडौल और कुरूप होती हैं। छछूंदरों की कुरूपता पर एक कहावत भी कही गई है—छछूंदर के सिर पर चमेली का तेल। जब कोई बुरी शक्ल वाला आदमी अपनी सुन्दरता बढ़ाने के लिए फैशन की चीजें पहिनता है, तो यह कहावत कही जाती है।

छछूंदरें चूं-चूं करती हुई चलती हैं। कभी अकेली चलती हैं, तो कभी *15-20* छछूंदरें एक पंक्ति में चलती हैं। उस समय ऐसा लगता है, मानो कोई सांप चल रहा हो। एक बार एक छोटा बालक पन्द्रह-बीस छछूंदरों को एक पंक्ति में चलता हुआ देख कर सांप-सांप चिल्ला उठा। जब उसका बाप लाठी लेकर सांप को मारने के लिए दौड़ा, तो यह देख कर हैरान हो गया कि, वह सांप नहीं, छछूंदरें थीं, जो मुख में मुख मिला कर चल रही थीं। चूहे तो 10-20 घर में रह सकते हैं। पर यदि 10-20 छछूंदरें घर में आ जायं, तो घर में रहना मुश्किल हो जायगा। क्योंकि छछूंदरों के शरीर से एक तरह की बदबू निकलती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि, छछूंदरों के शरीर के भीतर एक तरल पदार्थ होता है, जो बदबूदार होता है। छछूंदरें जब चलती हैं, तो उनके शरीर से वही बदबू बाहर निकलती है।

छछूंदरें अपनी बदबू से ही अपनी रक्षा करती हैं। ईश्वर ने उनके शरीर

से निकलने वाली बदबू को उनके लिए कवच के समान बनाया है। अगर उनके शरीर से वह बदबू न निकलती, तो बिल्लियां, कुत्ते, कौवे, चील आदि पक्षी उनका जीना हराम कर देते।

बिल्लियां चूहों को देखते ही झपट पड़ती हैं, पर छछूंदरों को देख कर नाक-भौ सिकोड़ लेती हैं। खाने की कौन कहे, उनकी ओर आंख भर देखती भी नहीं। इसका कारण है, वही बदबू, जो छछूंदरों के शरीर से बाहर निकलती है।

डाक्टरों का कहना है कि, छछूंदरों के शरीर के भीतर जो तरल पदार्थ होता है, वह जहरीला भी होता है। अगर खाने-पीने की किसी चीज में छछूंदरें मुख डाल देती हैं, तो वह चीज जहरीली हो जाती है। नमक और दूध आदि चीजों में तो छछूंदरों का विष बहुत जल्दी घुल-मिल जाता है। एक बार केलीफोर्निया के एक घर में छछूंदरों के विष से विषाक्त नमक को खाने से एक घर के कई आदमियों की मृत्यु हो गई थी। गनीमत तो यह है कि, छछूंदरें चूहों की तरह खाने-पीने की चीजों में अधिक मुख नहीं डालतीं।

चूहों के द्वारा काट खाये जाने की बात तो प्रायः सुनी जाती है, पर यह बात बहुत कम सुनने में आती है कि, किसी छछूंदर ने किसी आदमी को काट खाया है। डाक्टरों का कहना है कि अगर छछूंदर किसी आदमी को काट ले, तो उसकी मौत भी हो सकती है। अगर मौत न होगी, तो इसमें तो संदेह बिलकुल नहीं है कि, उसका शरीर रोगग्रस्त हो जायगा।

सच है, छछूंदरें दुर्गन्ध पैदा करती हैं और बेडौल होती हैं, पर यह नहीं समझना चाहिए कि, छछूंदरें बेकार होती हैं। जिस तरह संसार की सभी चीजों से कुछ न कुछ लाभ होता है, उसी तरह छछूंदरों से भी लाभ होता है। सांप आदमी का शत्रु होता है। जिसे काट लेता है, उसका बचना मुश्किल हो जाता है। ईश्वर ने सांप से आदमी की रक्षा के लिए ही छछूंदर को बनाया है, जिस घर में दो या एक भी छछूंदरें आती-जाती रहती हैं, उस घर में सांप का प्रवेश नहीं होता।

सांप और छछूंदर में बड़ी गहरी दुश्मनी है। जहरीला से जहरीला सांप भी छछूंदर को देखते ही ब[illegible]चाकर खिसक जाता है। अगर कहीं उसने चूहे के धोखे में छछूंदर [illegible] मुंह में [illegible] लिया, तो एक गहरी समस्या पैदा हो जाती है। अगर वह छछूंदर को छोड़ [illegible] है, तो भी निश्चित रूप से उसकी मृत्यु हो जाती है, और यदि खा लेता है, तो भी मृत्यु हो जाती है। इसी बात को दृष्टि में रखकर यह कहावत कही गई है—भई गति सांप छछूंदर केरी।

चूहे की तरह छछूंदर भी बिल में ही रहती है, पर चूहे की तरह छप्पर पर चक्कर नहीं लगाती। वह केवल बिल में ही रहना पसन्द करती है। उसका बिल चूहों के बिल के समान ही होता है

अगर मर्दुमशुमारी की जाय, तो दुनिया में चूहों की अपेक्षा छछूंदरों की संख्या ब[illegible]त कम मिलेगी। यदि कहीं छछूंदरों की संख्या चूहों के समान ही होती, तो दुनिया [illegible] इतनी दुर्गन्ध फैलती कि मनुष्यों का रहना कठिन हो जाता।

जहां तक हो सके, छछूंदरों से बचने का प्रयत्न करना चाहिए, पर सांप से सुरक्षित रहने के लिए छछूंदरों पर पाबन्दी नहीं लगानी चाहिए। ऐसा करने से अपनी ही हानि होनी का डर रहता है।

□□